कॉंट्रिब्यूशंस टू इंडियन सोशियोलॉजी (NS)
खंड 10 संख्या 1 (1976)

मुखौटे और चेहरे: पंजाबी रिश्तेदारी पर एक निबंध*

वीना दास

दिल्ली विश्वविद्यालय

अनुवाद: रवि नंदन सिंह, शिव नादर विश्वविद्यालय।

"अगर इंसान से यह विचार छीन लिया जाए कि वह इस शरीर रूपी मशीन में एक आत्मा (या प्रेत) जैसा है, तो उसे सिर्फ एक मशीन करार कर दिया जायेगा. यह भी हो सकता है कि इंसान असल में एक तरह का पशु ही हो, जैसे कि एक उच्चतर स्तनपायी. लेकिन, अभी तक यह जोखिम भरी कोशिश नहीं की गई है कि इस [क्रमशः अति-सांस्कृतिक और अति-प्राकृतिक (Tr.)] सोच से हटकर यह परिकल्पना की जाए कि शायद इंसान वास्तव में खुद अपना ही एक स्वरूप है." **गिल्बर्ट राइल**

पंजाबी रिश्तेदारी का स्वभाव प्रकृति और संस्कृति से उत्पन्न नियमों के बीच एक प्रबल द्वंद्व (dialectic) के रूप में वर्णित किया जा सकता है।[1] पंजाबी रिश्तेदारी सिद्धांत में, प्रजनन और संभोग के जैविक

*(Og)इस शोध-पत्र को लिखते समय, मैं पीटर बर्जर, थॉमस लुकमैन, अरविंग गोफमैन और डेविड श्नाइडर की रचनाओं से बहुत प्रभावित रही हूँ। मैं टी.एन. मदन, जे.पी.एस. ओबेरॉय, शिव विश्वनाथन और कुरियाकोस ममकुट्टम की प्रभावी टिप्पणियों के लिए उनकी आभारी हूँ।

Tr. मानवशास्त्र एवं समाजशास्त्र में किंशिप (Kinship) परिवार, विवाह और रिश्तों की मिली-जुली दुनिया और उस से सम्बंधित तर्क, दर्शन, रूप के सामाजिक और राजनैतिक अध्ययन के लिए दिया गया एक नाम है। निबंध का नाम भी इसी तर्ज पर 'किंशिप' शब्द से जुड़ा है। किंशिप का हिंदी अनुवाद करते समय, आमतौर पर नातेदारी या रिश्तेदारी शब्दों का प्रयोग किया जाता है। अक्सर, इन दोनों शब्दों के समान उपयोग और 'नातेदारी-रिश्तेदारी' या 'रिश्तेदारी-नातेदारी' जैसे पर्यायवाची यौगिक (Synonymous compound) के प्रथागत उपयोग को देखते हुए, सहजता के लिए, मैंने इसे रिश्तेदारी कहने का निर्णय लिया है। ज्ञात हो कि के. एम. कापड़िया अपनी किताब, भारतवर्ष में विवाह और परिवार (1963), में इसे 'संबंध व्यवस्था' कहते हैं, क्योंकि किंशिप को अगर हम समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखें तो यह मानवीय संबंधों के प्रबंधन और व्यवस्था का मापक माना जाता है। प्रश्न यह है कि यह प्रबंधन और व्यवस्था किस प्रकार का है? निबंध में शब्दों के प्रयोग को ध्यान में रखते हुए, रिश्तेदारी के अलावा विभिन्न स्थानों पर मैं आवश्यकतानुसार पर्याय शब्दों भी प्रयोग करूँगा। एक और मुख्य बात यह है कि निबंध के प्रकाशन के समय, समकालीन समाजशास्त्र में 'फील्डवर्क' (क्षेत्र कार्य) से जुड़े लोगों को 'सूचनादाता' (informant), 'अध्ययन का विषय' (subject), 'उत्तरदाता' (respondent), जैसे नामों से जाना जाता था। अब उन्हें 'इंटरलोक्यूटर' या 'वार्ताकार' (interlocuter) कहा जाता है। निबंध के सहृदय भाव को ध्यान में रखकर मैंने यथावश्यक 'जानकार' और 'प्रतिभागी' शब्दों का चयन किया है। इसी प्रकार, मैंने 'सेक्स' (or "sexual intercourse") को हिंदी में 'मैथुन' या 'संभोग' में अनुवाद न करके, ज़रूरत के हिसाब से 'संभोग' और 'सहवास' का प्रयोग उचित समझा है। 'सेक्स' के लिए 'सहवास' शब्द का उपयोग अब बहुत कम होता है, और हिंदी साहित्य में इसे शायद अब एक प्रियवाक्य या मंगलार्थ शब्द (euphemism) माना जाता है। निबंध में, चूँकि यह प्रयोग दांपत्य से जुड़े पहलू में आता है, इसलिए मैंने 'कोहैबिटेशन' (cohabitation) के संदर्भ में 'सहवास' को चुना है और जहाँ सेक्स को एक सांस्कृतिक विचार के तौर पर पेश किया गया है, वहाँ इसे 'संभोग' लिखा है।

[1]यहाँ प्रस्तुत आंकड़े वर्ष 1974-75 में शहरी पंजाबियों के पचास परिवारों से एकत्र किए गए थे, जो एकल, खुले (single, open-ended) रिश्तेदारी नेटवर्क का हिस्सा थे। इनमें से अधिकांश परिवार दिल्ली में हैं, लेकिन कुछ अन्य शहरी क्षेत्र जैसे बॉम्बे, कलकत्ता, अमृतसर, फिरोजपुर और कानपुर में बिखरे हुए हैं। सभी सूचनादाताएँ अरोड़ा जाति से संबंधित हैं जो व्यापारियों की एक पारंपरिक जाति थी। अध्ययन में शामिल महिलाएँ शहरी पृष्ठभूमि से आती हैं, जो भारत के विभाजन से पहले पंजाब के लाहौर, अमृतसर, फिरोजपुर और भटिंडा शहरों में रहती थीं। उनकी वंशावली से पता चलता है कि उनके पूर्वज या तो 1900 से शहरी क्षेत्रों में चले गए थे, या वहाँ रह रहे थे। इन सूचनादाताओं की वर्तमान व्यावसायिक स्थिति छोटी दुकानदारों, विभिन्न व्यवसायों के सदस्यों और बड़ी उद्योगपतियों सहित एक विस्तृत श्रृंखला में आती है।

तथ्यों को व्यक्तियों के बीच कुछ मौलिक, मज़बूत और अपरिवर्तनीय संबंध बनाने वाला माना जाता है, जो पूरे मानवीय स्वभाव के दायरे से संबंधित होते हैं। रिश्तेदारी के जैविकीय पहलू को प्रकृति के इन तथ्यों (प्रजनन और संभोग) से निपटना होता है। हालाँकि, एक सामाजिक तथ्य के रूप में रिश्तेदारी को इन प्राकृतिक तथ्यों का हूबहू पुनर्कथन नहीं माना जाता है। बल्कि, उचित रिश्तेदारी व्यवहार का सार इन जैविकीय तथ्यों से परे जाना है। हम तर्क देंगे कि इज़्ज़त, जो पंजाबियों के बीच सबसे मूल्यवान आदर्शों में से एक है, प्राकृतिक शक्तियों के आगे झुकने के बजाय उनसे आगे बढ़कर हासिल की जाने वाली और बढ़ाए जानी वाली सामाजिक क्रिया मानी जाती है। यह श्रेष्ठता, जहाँ तक यह मानव स्वभाव का उल्लंघन करती है, अक्सर या तो एक मुखौटे के रूप में प्रस्तुत की जाती है जिसे जैविक आधार में सक्रिय पूर्व-सामाजिक या असामाजिक धाराओं को छिपाने के लिए पहना जाता है, या इसे एक बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जो व्यक्ति को उसके 'निम्न-स्व' से उसके 'उच्च-स्व' तक उठाता है। इज़्ज़त का घटना शर्मिंदगी या अपमान में व्यक्त होता है और लोग इसे "मुँह दिखाने लायक न रहना" जैसा समझते हैं।

प्रत्येक समाज को अपने लिए प्रकृति और संस्कृति के बीच एक विशिष्ट संबंध परिभाषित करना चाहिए। तदनुसार, नातेदारी व्यवस्था[2] को प्रजनन और संभोग की जैविक प्रक्रियाओं के लिए एक योजना बनानी चाहिए।[3] एक प्रकार का संबंध वह हो सकता है जिसमें नैतिक व्यवस्था को प्राकृतिक व्यवस्था पर आधारित माना जाता है, ताकि नैतिक संहिता के विरुद्ध अपराध मानव स्वभाव के विरुद्ध अपराध बन जाएँ। उदाहरण के लिए, समलैंगिकता और ऐसे ही अन्य यौन अपराधों को न केवल नैतिक संहिता के

संप्रदायों से जुड़ाव की बात करें तो, सूचना देनेवालों में आर्य समाज, सनातन धर्म और सिख समुदाय के सदस्य शामिल हैं। मैं यह भी बताना चाहूँगी कि इस नेटवर्क के कुछ प्रमुख परिवार मुझे पिछले बीस सालों से जानते हैं और मैं उनकी उदारता के लिए उनकी बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे उनके जीवन के इतने अंतरंग पहलुओं को साझा करने का अवसर दिया। मुझे उम्मीद है कि मैं अपने निष्कर्षों के अन्य पहलुओं पर भी अगले लेखों में प्रकाश डालूँगी।

[2] यहाँ 'किन्शिप सिस्टम' (नातेदारी व्यवस्था) अभिव्यक्ति का उपयोग पंजाबी नातेदारी के व्यवस्थित (मनमाना (arbitrary) होने के बजाय) स्वरूप को इंगित करने के लिए किया जा रहा है, जैसा कि बूदों (Boudon, 1971) में लिखा मिलता है।

[3] रिश्तेदारी प्रणालियों में जैविकी के स्थान पर चर्चा, निश्चित रूप से, बहुत पुरानी है। मुझे ऐसा लगता है कि समस्या यह समझाने की नहीं है कि रिश्तेदारी व्यवहार का कितना हिस्सा जैविकी द्वारा समझाया गया है, बल्कि यह है कि किस तरह से जैविकी के तथ्यों को रिश्तेदारी प्रणालियों में शामिल किया जाता है। दूसरे शब्दों में, समस्या यह दिखाने की नहीं है कि संस्कृति प्रकृति का हिस्सा है, बल्कि उस योजनाबद्ध तरीके को दिखाने की है जिसमें संस्कृति प्रकृति को शामिल करती है और रूपांतरित करती है।

विरुद्ध अपराध माना जा सकता है, बल्कि मानव स्वभाव के विरुद्ध भी माना जा सकता है। इसी प्रकार, अनाचार निषेध (incest taboo) के नियमों को किसी एक विशेष समुदाय की नैतिकता के बजाय, एक प्राकृतिक नैतिकता के अभिव्यक्तक के रूप में देखा जा सकता है।

दूसरी ओर, मानव स्वभाव को मूलतः पशुवत माना जा सकता है और समाजीकरण का संपूर्ण कार्य व्यक्ति को उसमें निहित पशुता पर विजय पाने में सक्षम बनाना हो सकता है। इस स्थिति में नैतिक संहिता अनिवार्यतः प्राकृतिक संहिता के विपरीत है। ये अवधारणाएँ न केवल व्यवस्था के मूल सिद्धांतों में, बल्कि समाज के गंभीर विश्लेषकों के कार्यों में भी अंतर्निहित हैं, यह बात मार्क्स और दुर्खीम की मानव प्रकृति की धारणाओं की तुलना करने पर स्पष्ट होती है। जैसा कि सर्वविदित है, मार्क्स के लिए, मनुष्य को अपनी भौतिक परिस्थितियों की बाधाओं से मुक्त होना चाहिए ताकि वह अपनी पूर्ण क्षमता का एहसास कर सके। दूसरी ओर, दुर्खीम के लिए, समाजीकरण का संपूर्ण कार्य व्यक्ति पर ऐसी बाधाएँ डालना है ताकि उसकी असामाजिक प्रकृति को बेलगाम स्वतंत्रता न मिले।

पंजाबी नातेदारी की प्रणाली यह मानती है कि वास्तविकता की सामाजिक व्यवस्था के पीछे जैविकी (Biology) का पूर्व-सामाजिक क्षेत्र निहित है। मानव आचरण इस जैविक आधार और सामाजिक रूप से निर्मित नोमोस (nomos) के बीच प्रबल द्वंद्व (dialectic) से उत्पन्न होता है।[4] ये दोनों स्तर भिन्न हैं, हालाँकि ये कुछ हद तक आपस में मिल सकते हैं। पंजाबी मान्यता यह है कि जैविक आधार से उत्पन्न आचरण को दबाया नहीं जा सकता, बल्कि उसे पर्दे के पीछे, सार्वजनिक दृष्टि से दूर रखा जाना चाहिए। पर्दे के पीछे का व्यवहार, सामने के व्यवहार से कम वास्तविक नहीं है, जहाँ व्यवहार सांस्कृतिक आधार

[4] 'नोमोस' शब्द का प्रयोग यहाँ बर्जर और लकमैन (1966) और बर्जर (1969) द्वारा प्रस्तावित अर्थ में किया गया है।
*Tr. बर्गर और लकमैन की कृति The Social Construction of Reality के अनुसार, नोमोस (Nomos) वह अर्थपूर्ण व्यवस्था या नियमबद्ध ढाँचा है जिसे मनुष्य अराजक संसार के सामने अपनी रक्षा के लिए सामाजिक रूप से निर्मित करते हैं। यह एक मानव-निर्मित दुनिया (इस निबंध में बाद में दुनियादारी का संदर्भ आता है) है जो हमारे जीवन-जगत (Life-World) में सभी अनुभवों को सुसंगत, सुव्यवस्थित और समझने योग्य बनाता है। नोमोस, संस्थाओं (Institutions) और वैधता (Legitimation) की प्रक्रियाओं के माध्यम से निर्मित होता है, और यह व्यक्तियों को एक साझा, स्थिर वास्तविकता प्रदान करता है। यह हमें अर्थहीनता और एनोमी (Anomie/अराजकता) की भावना से बचाता है, जिससे सामाजिक जीवन संभव हो पाता है। इस प्रकार, नोमोस एक सुरक्षात्मक ढाल का काम करता है जो जैविक अस्तित्व को सामाजिक अस्तित्व में बदल देता है।

से प्राप्त नियमों द्वारा नियंत्रित होता है।[5] वास्तव में, नातेदारी से संबंधित सांस्कृतिक नोमोस (cultural nomos), एक तरह से, प्राकृतिक जैविकी शक्तियों की कीमत पर निर्मित होता है; यह दुनियादारी के प्रभावों से संबंधित है और यह हमेशा जैविक वास्तविकताओं के संसार में वापस फिसल जाने के खतरे के कारण अस्थिर रूप से संतुलित रहता है। हम अब पहले जैविकी के रूप में नातेदारी और सामाजिक रूप से निर्मित नोमोस के रूप में नातेदारी की विशिष्टता का वर्णन करके, और फिर यह दिखाकर कि व्यक्तिगत आचरण को इन दोनों के बीच के प्रबल द्वंद्व (dialectic) के संबंध से किस प्रकार उपजा माना जाता है, इन तर्कों की पुष्टि करेंगे (तुलना करें: बर्जर 1966)।

जैविकी के रूप में नातेदारी

पंजाबी कहते हैं कि जैविकी के दो मूलभूत तथ्य, जिनके साथ रिश्तेदारी की नैतिकता को भी ध्यान में रखना होता है, वे हैं प्रजनन और सहवास। प्रजनन का पंजाबी सिद्धांत यह है कि स्त्री खेत तैयार करती है और पुरुष बीज।[6] शास्त्रीय हिंदू सिद्धांत की तरह, संतान की गुणवत्ता बीज की गुणवत्ता से निर्धारित होती है। फिर भी, खेत को बीज को सहन करने में सक्षम होना चाहिए। यदि बीज बहुत शक्तिशाली है, तो वह 'खेत को जला देगा'। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि जननकर्त्ता पुरुष और जननकर्त्री स्त्री के गुण समान रूप से मेल खाते हों। प्रजनन में पुरुष की भूमिका बीज (वीर्य) जमा करने के साथ समाप्त हो जाती है और इस कृत्य को गर्भाधान के रूप में देखा जाता है, जो पुरुष द्वारा स्त्री को दिया गया गर्भ धारण करने का उपहार है।

माँ के गर्भ में बीज विकसित होकर शिशु का निर्माण करता है। वीर्य से शिशु की हड्डियाँ बनती हैं और माँ के रक्त से रक्त बनता है। इसीलिए कहा जाता है कि गर्भवती स्त्री में मासिक धर्म बंद हो जाता है। माँ शिशु को नौ महीने तक अपने गर्भ में रखती है। इन नौ महीनों में माँ के आचरण का गर्भस्थ शिशु

[5] व्यवहार के 'मंच पर' (on stage) और 'मंच के पीछे' (backstage) होने के बीच का यह सूक्ष्म अंतर गॉफ़मैन (Goffman, 1958:128) द्वारा प्रस्तुत किया गया था। यहाँ इसे कुछ अलग उद्देश्यों के लिए गॉफ़मैन से अनुकूलित किया गया है।

[6] आगे जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, उसमें इस विषय पर जानकारों/ प्रतिभागियों द्वारा दिए गए विभिन्न कथनों पर मेरे द्वारा एक निश्चित मात्रा में व्यवस्थीकरण (systematization) स्थापित किया गया है। जानकारी एकत्र करते समय, मैंने अपने सूचनादाताओं से उनके प्रजनन के सिद्धांतों का वर्णन करने के लिए कभी नहीं कहा था। इस विषय पर सारी जानकारी विवाह-संबंध तय करने, शिशु-जन्म, बाँझपन, नपुंसकता और वंध्यत्व के बारे में चर्चाओं के संदर्भ में संकलित की गई थी।

के स्वास्थ्य और चरित्र पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस अवधि के दौरान यह आवश्यक है कि माँ आहार संबंधी अनेक निषेधों का पालन करे, शिशु के स्वास्थ्य के लिए विशेष खाद्य पदार्थ खाए, धार्मिक अनुष्ठानों का पालन करे और अपने विचारों को भी शुद्ध रखे। शिशु को 'नौ महीने तक गर्भ में रखने' के कृत्य को बलिदान (त्याग) के एक कार्य के रूप में संकल्पित किया जाता है। बूढ़ी महिलाएं अपने वयस्क बच्चों को इस बलिदान की याद दिलाती हैं और बदले में उनसे पुत्रवत सेवा की अपेक्षा करती हैं। माँ और बच्चे का आपसी प्यार 'पूर्व-सामाजिक' माना जाता है क्योंकि यह सहज रूप से आता है और प्राकृतिक, बिना सीखे व्यवहार से प्रवाहित होता है। लोग अक्सर कहते हैं कि एक पत्नी को बदला जा सकता है क्योंकि एक महिला प्रजनन के उद्देश्यों के लिए किसी और दूसरी महिला के समान ही है, लेकिन एक माँ अपूरणीय होती है। इसके प्रमाण के रूप में वे अक्सर इस तथ्य का हवाला देते हैं कि दर्द में होने पर व्यक्ति हमेशा अपनी माँ (हाय माँ!) को बुलाता है लेकिन अपने पिता या अपनी पत्नी को कभी नहीं। इसलिए, वे तर्क देते हैं कि जब बीमारी जैसी स्थिति में व्यक्ति की सभी सुरक्षाएँ समाप्त हो जाती हैं, और सामाजिक दायित्वों के सभी मुखौटे उतार दिए जाते हैं, तो वह आराम और सांत्वना के लिए अपनी माँ की शरण लेता है।

कुछ महीनों या वर्षों तक, माँ शिशु को दूध पिलाती है। स्तनपान कराने की अवधि के दौरान, माँ को भोजन संबंधी सख्त नियमों का पालन करना पड़ता है। इन नियमों को गर्म और ठंडे खाद्य पदार्थों के ढांचे में समझाया गया है। गर्म खाद्य पदार्थ आम तौर पर कामोत्तेजना जगाते हैं और पौरुष और शक्ति से जुड़े होते हैं। ये शरीर से विभिन्न प्रकार के प्रवाह उत्पन्न करने में भी सहायक होते हैं। कुछ ठंडे खाद्य पदार्थ पवित्रता और तप से जुड़े होते हैं और इंद्रियों की मांगों और वासनाओं को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। हालाँकि, अन्य प्रकार के ठंडे खाद्य पदार्थ उदासीनता और आलस्य का कारण बनते हैं और प्रकृति के पाशविक पहलुओं को सामने लाते हैं। शिशु को स्तनपान कराने वाली माँ को दूध के प्रवाह में मदद के लिए कुछ प्रकार के गर्म खाद्य पदार्थ और मसाले दिए जाते हैं, लेकिन उसे अत्यधिक गर्म खाद्य पदार्थों से बचना चाहिए क्योंकि इससे उसका दूध इतना गर्म हो सकता है कि छोटे शिशु को दस्त हो सकते हैं। माँ के दूध की गुणवत्ता न केवल शिशु के शारीरिक स्वास्थ्य के लिए, बल्कि उसके चरित्र निर्माण के लिए भी महत्वपूर्ण है। इसलिए कभी-कभी कुछ अवांछनीय विशेषताओं जैसे कायरता, जोखिम न उठा पाने की क्षमता, ज़िद आदि को इस तथ्य के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है कि व्यक्ति

को दाई (धाय माँ) ने दूध पिलाया था। गर्भ में बच्चे को आकार देने और उसे दूध पिलाने की जैविक प्रक्रिया को माँ और बच्चे के बीच अविभाज्य स्नेह पैदा करने वाला कहा जाता है। इसलिए, माँ को बच्चे की सहज समझ का श्रेय दिया जाता है, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह तर्कसंगतता और तर्क के सभी नियमों को चुनौती देती है। जैसा कि हम बाद में देखेंगे, नातेदारी व्यवहार का एक बड़ा हिस्सा बिरादरी के संदर्भ में माँ-बच्चे के संबंध को गैर-व्यक्तिगत बनाने (de-individualizing) में निहित है, और इस पर पुनः ज़ोर तभी दिया जाता है जब इसे एक अन्य सशक्त जैविक संबंध, यानी कामुकता (sexuality), के विपरीत स्थापित किया जाता है। ।

पिता और बच्चे के बीच का रिश्ता माँ और बच्चे के रिश्ते से कम घनिष्ठ माना जाता है। हालाँकि 'खून दा खीचाओ' बच्चे को पिता की ओर आकर्षित करता है, लेकिन यह तथ्य कि बच्चा माँ के गर्भ में ही रहता है और क्योंकि उसने माँ का ही दूध पिया है, बच्चे को पिता की तुलना में माँ से कहीं अधिक मजबूती से जोड़ता है। दरअसल, सगे भाई-बहनों के बीच स्वाभाविक एकजुटता होती है क्योंकि वे 'एक ही गर्भ की संतान' होते हैं और क्योंकि उन्होंने "एक ही दूध पिया है"। इसका मतलब यह नहीं है कि भाई-बहनों के बीच दुश्मनी की उम्मीद नहीं की जाती। इसके विपरीत, लोग यह तर्क देते हैं कि संपत्ति ही भाइयों को एक-दूसरे का दुश्मन बना देती है। संपत्ति के लिए लड़ने वाले भाइयों को हड्डी के लिए लड़ने वाले कुत्तों के समान बताया गया है। 'शरीका' शब्द, जिसका अनुवाद पुरुष सगोत्र, सह-साझेदार के रूप में किया जा सकता है, संघर्ष को दर्शाता है। दो बहनों के बीच का रिश्ता शरीकी का नहीं होता, हालाँकि झगड़े की स्थिति में माता-पिता उन्हें यह कहकर डाँट सकते हैं, "क्या तुम दोनों शरीकी कर रही हो?" इस प्रकार भाइयों के बीच शत्रुता, हालाँकि अपेक्षित और कुछ हद तक स्वाभाविक है, मानवीय से कमतर मानी जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि संपत्ति के लालच ने उन्हें एक ही गर्भ साझा करने और एक ही दूध पीने से स्थापित जैविक संबंधों को भी त्यागने पर मजबूर कर दिया है। इस दुश्मनी को कभी भी वैध नहीं ठहराया जा सकता, न तो मानवीय मूल्यों के आधार पर और न ही मान-सम्मान/इज़्ज़त और प्रतिष्ठा (keeping face) के नैतिक मूल्यों के आधार पर।

माँ और बच्चे के बीच जैविक संबंधों पर लौटते हुए, पंजाबियों द्वारा अक्सर कहा जाता है कि बंधन की मजबूती बच्चे की तुलना में माँ के लिए अधिक मजबूत होती है। बच्चा धीरे-धीरे बड़ा होता है और माँ पर अपनी निर्भरता छोड़ देता है। शादी हो जाने के बाद, उसकी कामुकता द्वारा बनाए गए बंधन, प्रजनन द्वारा बनाए गए बंधनों के साथ सीधे टकराव में आ जाते हैं। माता-पिता और उनके विवाहित बेटों के एक ही निवास के तथ्य के कारण यह टकराव विशेष रूप से बेटों के मामले में सतह पर आता रहता है। एक महिला अपने बच्चों के लिए अपने प्यार को प्रभावी ढंग से छिपा सकती है, लेकिन यह हमेशा मौजूद रहता है और यह उसके सभी कार्यों को प्रभावित करने वाली शक्ति है। लोग अक्सर कहते हैं कि एक माँ एक बुरी माँ (कुमाता) नहीं हो सकती, हालाँकि एक बेटा बुरा या बुरा बेटा (कुपुत्र) हो सकता है। एक महिला जिसे अपने बच्चों के लिए किसी भी प्यार से रहित माना जाता है, उसे इंसान से कम और अक्सर भयावह माना जाता है। यही कारण है कि सामाजिक नातेदारी के स्तर पर माँ-बच्चे के संबंध को गैर-व्यक्तिगत बनाने (de-individualizing) के प्रयासों के बावजूद, यह मान लिया जाता है कि माँ का अपने बच्चों के साथ एक मजबूत प्राकृतिक बंधन होता है, जिसे छिपाया जा सकता है या त्यागा भी जा सकता है, लेकिन जिसे मिटाया नहीं जा सकता।

दूसरा जैविक कृत्य, जिसे दो व्यक्तियों के बीच कुछ साझा बंधन बनाने वाला माना जाता है, वह सहवास या संभोग-क्रिया है। हम यह दर्शाएँगे कि सांस्कृतिक रूप से निर्मित नोमोस (nomos) के स्तर पर, यौन संबंधों से उत्पन्न बंधनों को स्पष्ट स्थान नहीं दिया जाता है। इस स्तर पर, यौन संबंध का एकमात्र औचित्य यह है कि यह प्रजनन के लिए आवश्यक है। हालाँकि, मानव स्वभाव की सांस्कृतिक धारणाएँ पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए यौन आवश्यकताओं की पूर्ति के महत्व पर बल देती हैं। यद्यपि सामाजिक नातेदारी के स्तर पर कामुकता के बंधनों को स्पष्ट रूप से मान्यता नहीं दी जाती है, फिर भी सामाजिक नोमोस उनके महत्व को नकारता नहीं है, बल्कि उन्हें केवल परदे के पीछे (backstage) में धकेल देता है, जो सार्वजनिक दृष्टि से छिपा रहता है। यौन आवश्यकताएँ पुरुषों और महिलाओं दोनों से संबंधित होती हैं और यौवन की शारीरिक अभिव्यक्तियों से सीधे जुड़ी होती हैं। यौन पूर्ति के लिए कई उपमाएँ प्रयुक्त की जाती हैं। एक युवा लड़की जो यौन प्रेम के लिए तैयार है, उसे मथने के लिए तैयार ताज़ा दही

की मिट्टी की हांडी के रूप में वर्णित किया गया है। एक यौन रूप से अतृप्त महिला को एक प्यासे शरीर वाली के रूप में वर्णित किया गया है। युवा लड़कियों के माता-पिता उन्हें लंबे समय तक अविवाहित छोड़ना नासमझी समझते हैं क्योंकि उनकी यौनिकता की पूर्ति न होने पर वे दुर्भाग्यपूर्ण संबंध बना सकती हैं। चूँकि स्त्रियों की कामुकता को पुरुषों की कामुकता की तुलना में बहुत अधिक सावधानी से संरक्षित किया जाना चाहिए (यालमैन 1964 देखें), इसलिए युवा लड़कियों में वासना के विकास को नियंत्रित करने के लिए हर संभव प्रयास किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि सादा भोजन और सादा वस्त्र यौन इच्छाओं को शांत रखने में सबसे अधिक सहायक होते हैं। इसलिए, युवा लड़कियों को सुपारी और मटन जैसे तीखे खाद्य पदार्थ नहीं दिए जाते, न ही उन्हें लाल जैसे चटख रंग पहनने या फूलों का उपयोग करने की अनुमति होती है, जो कि विवाहित महिलाओं का विशेषाधिकार है।

हमने पहले कहा था कि कामुकता को नकारा नहीं जाता, उसे बस पर्दे के पीछे धकेल दिया जाता है। पर्दे के पीछे की स्थिति, ज़ाहिर है, न सिर्फ़ वास्तविक मानी जाती है, बल्कि महत्वपूर्ण भी मानी जाती है। उदाहरण के लिए, किसी लड़की की शादी के बाद, माता-पिता यह जानने में बेहद रुचि रखते हैं कि क्या उसका पति यौन रूप से सक्षम है और क्या उनका विवाह सही ढंग से संपन्न हुआ है, हालाँकि, इस चिंता को व्यक्त नहीं किया जाता। पर्दे के पीछे की पहुँच बहुत कम लोगों तक ही सीमित है। ये वे लोग हैं जो मज़ाकिया संबंध (joking relationship) की सामान्य श्रेणी के अंतर्गत आते हैं। (joking relationship: मज़ाकिया संबंध, मानवशास्त्र में एक सामाजिक संबंध जिसमें दो व्यक्तियों या समूहों को एक-दूसरे के साथ मज़ाक करने, छेड़ने या असहजता पैदा किए बिना अनुचित व्यवहार करने की सामाजिक अनुमति होती है।) एक लड़की के माता-पिता या उसका भाई खुद उससे उसके पति के साथ उसके यौन संबंधों के बारे में सवाल नहीं करेंगे। हाँ, उसके भाई की पत्नी द्वारा सीधे पूछताछ और अर्ध-गंभीर मज़ाक के ज़रिए उसके पति के पौरुष के बारे में पता लगाना शिष्टाचार का उल्लंघन नहीं है। हालाँकि कोई दोस्त या बड़ी बहन भी इस छेड़खानी में शामिल हो सकती है, लेकिन माता-पिता और बच्चों के बीच यौन संबंधों पर चर्चा वर्जित होने के कारण वे लड़की की माँ को कोई जानकारी नहीं दे सकते। इसलिए, लड़की के पैतृक परिवार में, भाई की पत्नी अपने मज़ाकिया रिश्ते का इस्तेमाल सीधे पर्दे के पीछे तक पहुँचने और माँ तक यह जानकारी पहुँचाने के लिए कर सकती है। इन उद्देश्यों के लिए उसे और उसकी

सास को परिवार की "बहुओं" (बेटियों से अलग) के रूप में एक साथ वर्गीकृत किया गया है, जो बाहर की महिलाएं हैं, जो एक-दूसरे को ऐसी जानकारी दे सकती हैं।

इसका एक उदाहरण: सरला, मेरी एक जानकार, जिसकी नई-नई शादी हुई थी, जब पहली बार अपने माता-पिता के घर आई, तो उसके माता-पिता ने उससे अपने पति के घर के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करने की अपेक्षा की थी—जैसे वहाँ खाए जाने वाले भोजन का प्रकार, खाना पकाने का तरीका, और उसके दाम्पत्य गृहस्थी के अलग-अलग सदस्यों की विलक्षणताएँ आदि। माता-पिता, बेटियों को वैवाहिक घर को अपना मानने की सलाह देने के बावजूद, इसे अस्वाभाविक मानते अगर बेटी उस सलाह का अक्षरशः पालन करे, खासकर शादी के शुरुआती वर्षों में। सरला के माता-पिता को जो बात अजीब लगी, वह केवल यह नहीं थी कि उनकी बेटी सभी सवालों पर एकाक्षरी उत्तर देती थी, बल्कि यह भी था कि कपड़ों, गहनों और खुद को सजाने में सरला की कोई रुचि नहीं दिखती थी। जैसा कि उसकी माँ ने मुझे बताया, एक लड़की को ताजा और खिली हुई दिखना चाहिए अगर वह अपने पति से संतुष्ट है और सरला की तरह पीली और मुरझाई हुई नहीं।[7] हालाँकि, उसकी माँ कुछ भी पता लगाने में असमर्थ थी। इस संदर्भ में, सरला की माँ ने अपने बेटे की पत्नी से कहा, 'मैं सरला की माँ हूँ। इसलिए मैं मजबूर हूँ। लेकिन तुम उसकी भाभी (भाई की पत्नी) हो। तुम्हे पता लगाना चाहिए कि वह अपने पति के साथ खुश है या नहीं।"

जैसा कि रैडक्लिफ-ब्राउन के मज़ाकिया संबंधों में महत्वपूर्ण योगदान (1940, 1949) ने ज़ोर दिया, विशेषाधिकार प्राप्त परिचितता उन तरीकों में से एक है जिनसे नातेदारी संबंधों में अस्पष्टता से उत्पन्न होने वाले खतरे से निपटा जाता है। यह सर्वविदित है कि प्रतीकों की अस्पष्टता वास्तविकता के विभिन्न स्तरों के बीच एक सेतु का काम कर सकती है, इसलिए यह देखकर कोई आश्चर्य नहीं होता कि मज़ाकिया

[7] फूल की उपमा अक्सर स्त्री के बारे में बात करने के लिए इस्तेमाल की जाती है। एक अविवाहित लड़की को एक कली की तरह कहा जाता है और कामुकता ही स्त्री को खिलने में मदद करती है। एक लड़की जो यौन रूप से अतृप्त है, उसे समय से पहले मुरझाए हुए फूल की तरह कहा जाता है।

संबंधों की अस्पष्टता का उपयोग "मंच के पीछे" और "सामने का मंच" के बीच की विभाजक रेखा को तोड़ने और नातेदारी व्यवहार के इन दो स्तरों को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है।

जहाँ दुल्हन के माता-पिता उसके पति की यौन योग्यता को लेकर चिंतित रहते हैं, वहीं दूल्हे के माता-पिता नए जोड़े की यौन अनुकूलता को लेकर चिंतित रहते हैं।[8] अगर किसी लड़के को उसके लिए चुनी गई दुल्हन पसंद नहीं आती, तो वह विवाह में पूर्ण यौन संबंध बनाने से इनकार करके विद्रोह कर सकता है। हालाँकि माता-पिता और बच्चों के बीच यौन संबंधों पर चर्चा करने की मनाही के कारण माता-पिता इस विषय पर लड़के से बात नहीं कर पाते, लेकिन यह व्यवहार उनके लिए सीधा अपमान है। लड़के का विवाह में पूर्ण यौन संबंध बनाने से इनकार करना इस बात का संकेत है कि उसे अपनी पत्नी बदसूरत या विकृत लगती है और यह अनुमान लगाया जाता है कि उसकी माँ को एक बड़े दहेज का लालच देकर शादी के लिए राजी कर लिया गया है।[9] ऐसे मामलों में उसकी सगी औरतें उसे आपस में या उसके मुँह पर ताना देती हैं, "उसने अपने बेटे की खुशियाँ भारी दहेज के लिए बेच दी हैं।"

एक बार जब विवाह संपन्न (सहवास से स्थापित) हो जाता है, तो काफ़ी चिंता दूर हो जाती है। पति-पत्नी के बीच यौन संबंध को खुलकर मान्यता नहीं दी जाती। फिर भी, यह माना जाता है कि कामुकता पुरुष और स्त्री के बीच मज़बूत बंधन बनाती है। इन बंधनों की उपमाएँ आमतौर पर भौतिक जगत से ली जाती हैं। इस प्रकार, जब कोई पुरुष अपनी पत्नी की उन माँगों के आगे झुक जाता है जिन्हें उसकी माँ अनुचित मानती हो, तो इसे इस उपमा से समझाया जाता है कि नमक का स्वभाव ही पानी में घुलना है, या लोहा हमेशा चुंबक की ओर आकर्षित होता है। दूसरे शब्दों में, साझा कामुकता को मज़बूत प्राकृतिक बंधन बनाने वाला माना जाता है जिसका विरोध करना बेहद मुश्किल होता है। इसे समझाने के लिए भौतिक उपमाओं का प्रयोग ही अपने आप में बहुत कुछ कहता है। संभोग के परिणामस्वरूप पुरुष का वीर्य नष्ट हो जाता है जो स्त्री में जमा हो जाता है। वीर्य को गाढ़ा रक्त माना जाता है। यही कारण है कि, एक स्त्री

[8] दुल्हन की प्रजनन क्षमता को लेकर उसके पीहर (जन्म) के रिश्तेदारों और वैवाहिक रिश्तेदारों में काफी चिंता होती है, लेकिन शादी के तुरंत बाद, प्राथमिक चिंता विवाह की पूर्णता को लेकर होती है।

[9] यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि यद्यपि पुरुष विवाह की औपचारिक बातचीत में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, फिर भी दूल्हे की माँ ही दूल्हे के लिए चुनी गई दुल्हन के लिए ज़िम्मेदार होती है। इसलिए, यदि दुल्हन सुंदर पाई जाती है, तो कुटुंब की महिलाएँ माँ को उसके बेटे के लिए एक सुंदर दुल्हन पाने के लिए बधाई देती हैं। यदि दुल्हन बदसूरत है, तो माँ को फटकार लगाई जाती है।

जो अपने पति से अत्यधिक यौन अपेक्षाएँ रखती है, वह उसे अस्वस्थ और थका हुआ बना सकती है। ऐसा कहा जाता है कि चूँकि वीर्य एक महिला में जमा होता है, इसलिए वह बहुत शक्तिशाली हो जाती है यदि वह मासिक धर्म नहीं कर रही हो। इस प्रकार, एक ओर, सहवास के कार्य को पुरुष को कमजोर करने के लिए देखा जाता है। दूसरी ओर, पर्दे के पीछे के मूल्य के रूप में यौन पौरुष को पंजाबियों के बीच अत्यधिक महत्व दिया जाता है। इतना अधिक, कि इस आशय का एक बयान भी कि कोई विशेष पुरुष कुछ कमजोर लगता है, यह संकेत देने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है कि वह यौन रूप से अपर्याप्त है। निःसंतानता के मामलों में, ये संकेत दुर्लभ नहीं हैं, क्योंकि निःसंतान महिला पर उसके वैवाहिक परिवार द्वारा बांझपन का आरोप लगाया जा सकता है, उसका अपना जन्मजात परिवार या बिरादरी के अन्य सदस्य यह कहकर उसके पति को दोषी ठहरा सकते हैं कि उसका पति हमेशा एक कमजोर व्यक्ति था।

जबकि सहवास और प्रजनन दोनों ही लोगों के बीच शारीरिक बंधन बनाते हैं, फिर भी एक महत्वपूर्ण अंतर बना रहता है। एक पुरुष इस तथ्य को नहीं बदल सकता कि वह एक विशेष स्त्री से पैदा हुआ था, उसके गर्भ में बना था और उसके दूध से पोषित हुआ था। दूसरी ओर, कामुकता की माँगें किसी भी स्त्री द्वारा पूरी की जा सकती हैं, या ऐसा माना जाता है। एक पत्नी एक तरह से बदली जा सकती है, जबकि एक माँ नहीं। यहाँ तक कि एक स्त्री के लिए भी, सती का आदर्श या विधवा-पुनर्विवाह पर प्रतिबंध एक नैतिक नियम से उत्पन्न माना जाता है, न कि मानव स्वभाव के नियमों से। इसके विपरीत, महिलाओं को अक्सर स्वाभाविक रूप से चंचल, अपनी कामुकता की दासी बताया जाता है, जिन्हें कठोर नैतिक नियमों द्वारा नियंत्रित किया जाना चाहिए। तीस के दशक में बाल-विधवाओं के पुनर्विवाह के पक्षधरों द्वारा दिए गए सबसे मजबूत तर्कों में से एक यह था कि ये महिलाएँ, जिनकी स्वाभाविक कामुकता पूरी नहीं हुई थी, या तो वेश्यावृत्ति के जीवन की ओर आकर्षित होती थीं या परिवार के भीतर स्थिर विवाहों के लिए खतरा बन जाती थीं। [देखें इस संदर्भ में दास और चक्रवर्ती (n.d.)]

सामाजिक रूप से निर्मित नोमोस के रूप में रिश्तेदारी

पिछले भाग में हमने प्रजनन और सहवास की जैविक क्रियाओं द्वारा निर्मित बंधनों का वर्णन किया है। जैसा कि हमने ज़ोर दिया है, ये ऐसे बंधन हैं जो लोगों के बीच मज़बूत भावनात्मक बंधन बनाते हैं, क्योंकि इन बंधनों से उत्पन्न व्यवहार को स्वाभाविक माना जाता है। इसे सहज और जन्मजात व्यवहार माना जाता है। जो व्यक्ति जैविकी के इन तथ्यों से उत्पन्न भावनाओं से रहित है, वह या तो एक तपस्वी है जिसने खुद को मानवीय स्थिति से ऊपर उठना सिखाया है; या वह एक भयावह प्राणी है जो मानव से कम है। जैविक नातेदारी से बने संबंधों को स्वाभाविक माना जाता है। दूसरी ओर, सामाजिक रिश्तेदारी एक रचना है; इसे सामाजिक रूप से निर्मित नियमों द्वारा शासित माना जाता है। जैविक रिश्तेदारी अपने स्वयं के नियमों का पालन करती है जिन्हें सार्वभौमिक माना जाता है। दूसरी ओर, सामाजिक रिश्तेदारी उन अवधारणाओं द्वारा शासित होती है जो रचनाएँ हैं और इसलिए, उन्हें विशेष समुदायों के लिए विशिष्ट माना जाता है। इस प्रकार, जबकि पंजाबी हिंदुओं को ऐसे समुदायों के बारे में सोचना मुश्किल होगा जहाँ माताएँ अपने बच्चों से प्यार नहीं करते या कामुकता की ज़रूरतें पुरुषों और महिलाओं द्वारा महसूस नहीं की जाती हैं; वे यह मानते हैं कि कुछ समुदायों में माताओं को अनुमति है दूसरों की तुलना में उनके प्रेम की अभिव्यक्ति ज़्यादा होती है, या यह कि कुछ में महिलाएँ केवल एक बार विवाह करती हैं जबकि अन्य में वे कई बार विवाह करती हैं। इस प्रकार, सामाजिक रिस्तेदारी के विभिन्न मानदंडों वाले समुदायों के बारे में उनकी अवधारणा यह है कि ये नैतिक रूप से निम्नतर हैं, लेकिन किसी भी तरह से कम मानवीय नहीं हैं।

जैसा कि पहले भाग में बताया गया है, नातेदारी से संबंधित नैतिक आचार प्राकृतिक नातेदारी की हूबहू अभिव्यक्ति नहीं होते। इसके बजाय, नातेदारी संबंधी नैतिकता का अर्थ प्राकृतिक नातेदारी से ऊपर उठना है। नैतिक नियमों का उल्लंघन लज्जा (शर्म, हया) और मान-हानि के रूप में व्यक्त होता है। लज्जा या मान-हानि से जुड़ा व्यवहार नातेदारी शिष्टाचार के एक साधारण उल्लंघन से लेकर इज़्ज़त के बड़े

हनन तक हो सकता है। अब हम परिवार और बिरादरी[10] के संदर्भ में नातेदारी व्यवहार का वर्णन करेंगे और दिखाएंगे कि कैसे व्यक्तिगत आचरण प्राकृतिक नातेदारी और सामाजिक नातेदारी के बीच द्वंद्व से उत्पन्न होता है।

एक पुरुष या महिला के जीवन-चक्र के संदर्भ में, एक व्यक्ति से अपेक्षा की जाती है कि वह अपना विवाहित जीवन एक वंशानुगत (lineal) या संयुक्त गृहस्थी (collaterally joined household) से जुड़े परिवार में शुरू करे। मैंने जिन उनचास जीवित महिलाओं के विवाहों का रिकॉर्ड किया, उनमें से केवल एक ही मामला ऐसा था जिसमें एक जोड़े ने अपना विवाहित जीवन एकल परिवार में शुरू किया था। अन्य सभी मामलों में, घर में पति का कम से कम एक सगोत्र सदस्य शामिल था। जीवन के इस चरण में पति और पत्नी के बीच बातचीत के विशिष्ट पैटर्न का काफी विस्तार से वर्णन किया गया है (उदाहरण के लिए, कर्वे 1958; मदन 1965)। जैसा कि सर्वविदित है, नातेदारी नैतिकता के नियम पति और पत्नी के बीच यौन संबंधों की हर अभिव्यक्ति के पूर्ण दमन की मांग करते हैं। पत्नी जब भी थकी हो, बिस्तर पर नहीं जा सकती। उसे या तो सभी के सो जाने का इंतज़ार करना पड़ता है या जब तक कोई वरिष्ठ सदस्य, आमतौर पर उसकी सास, उसे यह न बता दे कि वह सो सकती है वह खुद सोने नहीं जा सकती। संभोग को विवेकपूर्ण होना आवश्यक है। अध्ययन किए गए कई परिवारों की भीड़-भाड़ वाली आवासीय परिस्थितियों में, पति-पत्नी को यह सुनिश्चित करने के लिए काफ़ी प्रयास करना पड़ता था कि इसका कोई संकेत बाहर न पहुँचे। अगर दंपत्ति को अलग कमरा दिया गया था, तो दंपत्ति इस बात का ध्यान रखा करते थे कि दिन के समय कमरे का दरवाज़ा कभी बंद न हो - जिसे तुरंत शर्मनाक आचरण कहा जा सकता है। इसी तरह, अपने बड़े रिश्तेदारों की मौजूदगी में, एक महिला कभी भी अपने पति के साथ एक ही बिस्तर पर नहीं बैठेगी।

[10] बिरादरी शब्द का अनुवाद 'किन्ड्रेड' (Kindred) शब्द से करना पूरी तरह सही नहीं है, क्योंकि यह एक अहं-केंद्रित (ego-centered) समूह को दर्शाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि वाटुक (1969) और सिंहली संदर्भ में, यालमन (1962) के साथ यही मुख्य समस्या है। चूँकि किन्ड्रेड जैसी अवधारणाएँ, जिन्हें नातेदारी अध्ययनों में एक विश्लेषणात्मक दर्जा दिया गया है, उनकी उत्पत्ति एक विशिष्ट संदर्भ (जैसे, रोमन न्यायशास्त्र) में हुई है, इसलिए सांस्कृतिक रूप से भिन्न समूहों के रूपों पर उनका आरोपण अनिवार्य रूप से मूल अर्थ को विकृत करता है। हम बिरादरी शब्द को बनाए रखने का प्रस्ताव करते हैं, जिसकी विशेषताएँ कई लेखों से स्पष्ट हैं, जैसे एग्लर (1950), लीफ (1972) और टंडन (1968)। आधुनिक नातेदारी अध्ययनों की भाषा के संदर्भ में ख़ानदान या एकादा जैसे समूहों के लिए मूल शब्दों का प्रतिपादन कई कठिनाइयों को शामिल करता है। इनमें से कुछ पर मैंने पहले चर्चा की है (दास 1973, 1974)।

जैसा कि सर्वविदित है, नवविवाहित जोड़ा दिन के दौरान एक-दूसरे को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ करता है। उदाहरण के लिए, शाम को घर पहुंचने पर, पति अपनी पत्नी को छोड़कर हर किसी के साथ अभिवादन कर सकता है। इसी तरह, पत्नी को उसकी उपस्थिति में कोई दिलचस्पी दिखाने से बचना होता है। यह मिथक कायम है कि एक आदमी के लिए उसकी पत्नी एक अजनबी है, जबकि उसकी अपनी माँ और बहन उसका अपना खून हैं (मदन 1965 देखें)। हालाँकि, यह स्पष्ट मान्यता है कि यह एक मिथक है, और मामलों की सही स्थिति को नहीं दर्शाता। लोग जानते हैं कि एक आदमी को कामुकता के जैविक संबंधों और अपनी माँ के साथ पहले से मौजूद जैविक संबंधों के बीच संघर्ष का सामना करना पड़ता है। दोनों के बीच, कामुकता का रिश्ता कभी भी माँ-बच्चे के रिश्ते की पवित्रता का दावा नहीं कर सकता है। बच्चे को जन्म देने और उसका पालन-पोषण करने के लिए माँ ने जो कष्ट और त्याग किया है, वह माँ-बच्चे के रिश्ते को एक बड़ा नैतिक दावा प्रदान करता है। जब भी मैंने अपने सहभागी जानकारों का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया कि हिंदू पौराणिक कथाओं में कुछ जोड़ों को पति और पत्नी के रूप में एक साथ पूजा जाता है (जैसे शिव और पार्वती या राम और सीता), मुझे हमेशा बताया गया कि यह केवल तप रुपी बलिदान के माध्यम से ही संभव है कि कामुकता का एक आधार संबंध एक नैतिक रिश्ते में परिवर्तित हो सकता है। इस प्रकार गौरी (शिव से विवाह से पहले पार्वती का नाम) को शिव को पति के रूप में पाने से पहले कठोर तपस्या करनी पड़ी, और सीता को राम के साथ वन में जाने और उनके साथ कष्ट सहने के लिए तैयार होना पड़ा।"[11]

इस प्रकार, कामुकता और प्रजनन द्वारा निर्मित संबंधों के बीच काफी तनाव होता है और पुरुष अक्सर अपनी माँ और पत्नी के प्रति वफ़ादारी के बीच फँसा रहता है। पत्नी के प्रति वफ़ादारी छिपी हो सकती है लेकिन लोग इसे असली मानते हैं। यही कारण है कि आकर्षक युवतियों पर अक्सर अपने पतियों पर टोना या जादू (जादू या मंत्र) करने का आरोप लगाया जाता है। चूँकि सैद्धांतिक तौर पर पत्नी हमेशा

[11] संयोगवश, सीता के आचरण की नैतिकता पर अक्सर बहस होती थी। कुछ जानकारों का कहना था कि लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला ही थीं जिन्होंने चौदह साल तक अपने पति के बिना रहने की प्रतिज्ञा करके एक नेक आचरण दिखाया था।

बदली जा सकती है, इसलिए किसी पुरुष का किसी एक स्त्री के प्रति स्नेह स्पष्टीकरण की माँग करता है। कुछ माताएँ इस आकर्षण को अपनी बहुओं की जादुई शक्तियों के संदर्भ में लोगों को समझाकर अपने बेटों को दोषमुक्त करना चाह सकती हैं, जबकि अन्य इस घटना की व्यापकता को पहचानती हैं और इसे यौन संबंधों के बंधन की शक्ति का परिणाम मान सकती हैं, जो माँ के साथ पहले के बंधनों पर हावी हो जाते हैं।

कभी-कभी कोई पुरुष सभी नियमों का पालन करते हुए यह स्पष्ट कर सकता है कि यह दिखावटी अनुपालन केवल एक दिखावा है। ऐसे में, वह 'पर्दे के पीछे' से 'वास्तविक' स्थिति बताने के लिए संकेत दे सकता है। उदाहरण के लिए, उसकी बहन और उसकी नवविवाहित पत्नी के बीच झगड़े में, एक आदमी ने अपनी पत्नी की पिटाई की, इस तरह अपनी पत्नी के ख़िलाफ़ अपनी बहन के प्रति अपनी वफ़ादारी का प्रदर्शन किया। हालाँकि, उसने यह भी स्पष्ट कर दिया कि उसका यह व्यवहार सामाजिक रिश्तेदारी के नियमों का केवल खोखला पालन था। उन्होंने ऐसा उसी रात अपनी पत्नी के साथ इतने अशोभनीय ढंग से, ज़ोर आवाज़ों में, यह जताने के लिए कि सब सुन लें या सब पर ज़ाहिर हो जाए, संभोग किया कि यह सभी के लिए स्पष्ट हो गया कि उन दोनों के बीच कोई वास्तविक मनमुटाव नहीं था। उसकी पत्नी ने मुझे बताया कि हालाँकि उसे पीटा गया था, ऐसा लग रहा था की कल रात के घटना के बाद उसकी माँ एक जुआरी जैसी लग रही थी जिसने सब कुछ खो दिया हो।

यह तथ्य कि यौन संबंधों के बंधनों की सभी अभिव्यक्तियों को नियंत्रित करने की आवश्यकता होती है, अक्सर उल्लेखित किया गया है, पर इससे संबंधित, किंतु एक भिन्न प्रकार के नियम पर वह ध्यान नहीं दिया गया है जिसके वह योग्य है। संयुक्त परिवार में जीवन का एक बहुत ही उल्लेखनीय तथ्य यह है कि छोटे बच्चों के माता-पिता दूसरों की उपस्थिति में उन्हें शायद ही कभी दुलारते हैं। मेरी एक वृद्ध महिला जानकार ने स्पष्ट रूप से कहा कि एक युवती को हमेशा अपने बच्चे के रोने पर ध्यान नहीं देना चाहिए और परिवार की किसी अन्य महिला को उसकी ज़रूरतों को पूरा करने देना चाहिए। संयोग से, यह आचार संहिता उसके वैवाहिक और मायके दोनों घरों में लागू होती है। कुछ जानकारों का मानना था कि यह इस तथ्य से उपजा है कि बच्चे अपने माता-पिता की कामुकता के फल हैं और इसलिए माता-

पिता उन्हें दुलारने या उनके साथ खेलने में 'शर्म' महसूस करते हैं। हालाँकि, मुझे लगता है कि इसकी व्याख्या में एक दूसरा और उतना ही महत्वपूर्ण तत्व भी है। यह बात मुझे तब स्पष्ट हुई जब एक वृद्ध व्यक्ति ने अपने बेटे को अपने पोते के साथ खेलते हुए देखकर टिप्पणी की, 'उसे अपने ही बेटे के साथ दुलारना और खेलना क्यों पड़ता है? क्या वह सोचता है कि हम उसके बेटे से पर्याप्त प्यार नहीं करते?' इस प्रकार, अपने बच्चों को दुलारना और उनकी माँगों पर तुरंत प्रतिक्रिया देना, परिवार के अन्य सदस्यों की उन्हें प्यार करने या उनकी देखभाल करने की क्षमता पर भी संदेह करना है। माता-पिता, जो बच्चे के जन्म के लिए सीधे तौर पर ज़िम्मेदार होते हैं, स्वाभाविक बंधनों द्वारा उसकी ओर आकर्षित होते हैं। बच्चे के प्रति उनका प्रेम स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है और उसे सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं होती। बच्चे के प्रति अपने प्रेम को छिपाकर, वे एक साथ अपने माता-पिता या भाई-बहनों पर बच्चे को समान रूप से प्यार करने के अपने विश्वास का दावा कर रहे होते हैं। यह रिश्तेदारी के जैविक तथ्यों के विपरीत रिश्तेदारी के नैतिक नियमों में विश्वास का कार्य है। इसका खंडन अक्सर संयुक्त परिवार में झगड़ों का कारण बनता है, जैसा कि निम्नलिखित मामले से पता चलेगा।

जिस घराने से यह घटना दर्ज की गई है, उसमें सात सदस्य थे, जिनके वंशावली संबंध और सापेक्ष आयु पृष्ठ पर दिए गए चित्र में दर्शाई गई है।

इस परिवार में, सबसे बड़े बेटे सतिंदर की शादी को लगभग दो साल ही हुए थे। सतिंदर और उसके छोटे भाई-बहनों के बीच काफ़ी तनाव पनप रहा था। उसकी पत्नी माया के अपने माता-पिता के साथ रिश्ते भी काफ़ी तनावपूर्ण थे, जैसा कि शादी के शुरुआती कुछ सालों में अक्सर होता है। मैंने जो ख़ास झगड़ा देखा, वह तब शुरू हुआ जब जीतेन्दर ने किसी छोटी सी बात पर पप्पू को थप्पड़ मार दिया। इससे माया भड़क गई और पप्पू को पकड़कर दूसरे कमरे में चली गई। जाते हुए वह मन ही मन बुदबुदाई,

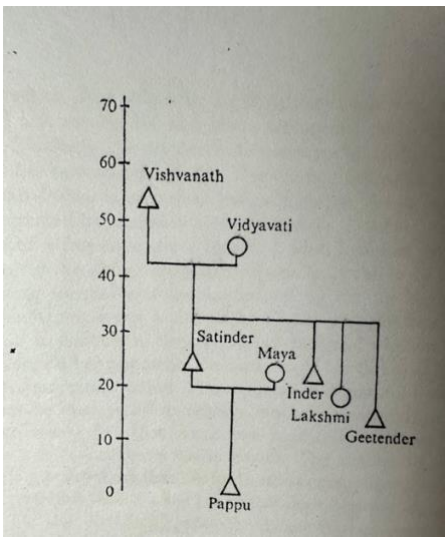

'अगर वह बच्चे को अपना मानता, तो वह उसे इतनी छोटी सी बात पर नहीं पीटता'। माया की सास ने यह सुना और तुरंत टिप्पणी की कि माया ने उचित व्यवहार की सभी सीमाओं को पार कर लिया है क्योंकि उसकी टिप्पणी का तात्पर्य था कि, (a) जीतेन्दर पप्पू को अपना नहीं मानता था, और (b) जीतेन्दर को बच्चे को थप्पड़ मारने का कोई अधिकार नहीं था, जिसका अर्थ था कि माया जीतेन्दर को एक अजनबी मानती थी। जब इस तरह का आरोप लगाया जाता है, तो झगड़ा शायद ही कभी किसी खास मुद्दे तक सीमित रहता है। यह रिश्ते से जुड़े अतीत के तथ्यों की जांच और अधिकारों और दायित्वों की समीक्षा तक फैल जाता है। हालाँकि माया कमरे से बाहर चली गई और सतिंदर घर पर भी नहीं था, छोटे बच्चों और माता-पिता ने माया के व्यवहार पर लंबी टिप्पणियों का सिलसिला शुरू कर दिया। जीतेन्दर ने कहा कि उसने बच्चे को थप्पड़ मारा क्योंकि वह उसे "अपना" समझता था। उसने तर्क दिया कि अगर अपने ही परिवार के सदस्यों को बच्चे को डाँटने की इजाज़त नहीं है, तो क्या यह काम किसी अजनबी को सौंपा जाएगा? वहाँ मौजूद परिवार के बाकी सभी सदस्यों ने उसका समर्थन किया। उन्हें आश्चर्य हुआ कि माया ने ऐसा वाक्य कैसे कहा, जिससे एक ही खून के लोगों का पूरा रिश्ता टूट गया।

मुझे नहीं पता कि झगड़ा आखिरकार कैसे सुलझा, लेकिन कुछ दिनों बाद साफ़ हो गया कि मामला सिर्फ़ ऊपरी तौर पर सुलझा था। परिवार में तनाव जारी रहा। सतिंदर, जो पहले मौके पर मौजूद भी नहीं था, और जीतेन्दर, जो झगड़े का केंद्र था, के बीच रिश्ते बहुत तनावपूर्ण हो गए थे। एक महीने बाद

पहले झगड़े के बाद सतेंद्र और जीतेन्दर के बीच एक और झगड़ा हुआ। एक दिन जब सतिंदर कुछ पढ़ रहा था, जीतेन्दर ने रेडियो चालू करने की जिद की। सतिंदर ने उसे बार-बार रेडियो बंद करने के लिए कहा, लेकिन जीतेन्दर ने उसने उसकी बात अनसुनी कर दी। इस तरह उत्तेजित होकर सतिंदर उठा और उसेने जीतेन्दर को थप्पड़ मार दिया। तुरंत ही वहां हंगामा मच गया। जीतेन्दर ने ऊंची आवाज में कहा कि उसके भाई ने उसे थप्पड़ मारा है क्योंकि उसकी पत्नी ने उसके दिमाग में जहर भर दिया था। उसने आगे आरोप लगाया कि सतिंदर अब घटनाओं के बारे में अपनी पत्नी की बातें सुनना पसंद करता है और अपने माता-पिता और भाई-बहनों पर विश्वास नहीं करता। लड़कों के माता-पिता भी सतिंदर के आलोचक थे। उन्होंने दावा किया कि उन्होंने सतिंदर की शिक्षा पर बहुत पैसा खर्च किया था, इस विश्वास के साथ कि सबसे बड़ा होने के नाते वह अपने छोटे भाइयों और बहनों की देखभाल करेगा, लेकिन ये उम्मीदें व्यर्थ गईं। इस तरह के मौखिक आरोप-प्रत्यारोप के बाद, सतिंदर यह कहते हुए चला गया कि वह आत्महत्या करने जा रहा है इंदर उसे लगभग घसीटकर वापस ले जाने ही वाला था कि सतिंदर दौड़कर रसोई में गया और चाकू निकाल लाया। इस बार उसने कहा कि वह अपना ही हाथ काट लेगा जिससे उसने अपने भाई को थप्पड़ मारा था। वह बार-बार कह रहा था कि उसने अपने भाई को एक मामूली औरत के लिए मारा है। इस बीच वहाँ कई पड़ोसी इकट्ठा हो गए और वे सभी इस घटनाक्रम में शामिल हो रहे थे। आखिरकार दोनों भाइयों को एक-दूसरे को गले लगाने और सुलह करने के लिए मना लिया गया। पड़ोसियों ने कहा कि यह निश्चित रूप से भरत मिलाप का पुन: मंचन था, जिसमें रामायण के उस प्रसिद्ध प्रसंग का जिक्र था जहाँ राम और भरत, शुरुआती गलतफहमी के बाद, अंततः मिलाप करते हैं। तनाव फिर से अस्थायी रूप से कम हो गया।

परिवार के रिश्ते लगातार बिगड़ते गए। एक साल के अंदर ही सतिंदर ने अपनी पत्नी और बच्चे के साथ एक अलग घर बसा लिया। यह बिल्कुल स्पष्ट था कि परिवार किसी न किसी रूप में बँट रहा था। फिर भी, दोनों तरफ़ सचमुच दुःख था। सतिंदर को माया द्वारा दहेज में लाई गई हर चीज़ दी गई। इसके अलावा, उसकी माँ ने उन्हें कुछ बर्तन और दूसरी चीज़ें दीं जिनकी उन्हें ज़रूरत पड़ सकती थी। हालाँकि, संपत्ति के बँटवारे का कोई ज़िक्र नहीं था। परिवार के सभी रिश्तेदारों को बताया गया कि सतिंदर को एक डॉक्टर ने आने-जाने से बचने के लिए अपने कार्यस्थल के पास एक घर लेने की सलाह दी है। मुझे यकीन है कि बहुत कम लोगों ने इस कहानी पर सचमुच यकीन किया होगा, लेकिन सतिंदर के माता-

पिता के लिए यह एक इज्जत बचाने का तरीका था। हालाँकि, अलग रहने का मतलब यह नहीं था कि दोनों परिवारों के बीच सारे संपर्क टूट गए थे। सतिंदर का परिवार अधिकतर रस्मों वाले अवसरों पर माता-पिता से मिलने आता था। छोटे बच्चे को अक्सर कई दिनों के लिए उसके दादा-दादी के घर छोड़ दिया जाता था। माया को शीघ्र ही एक और बच्चा हुआ और उसकी सास उसकी सहायता के लिए वहां गई तथा स्वयं को काफी असुविधा होने के बावजूद निर्धारित चालीस दिनों तक उसके साथ रही।

संयुक्त परिवार के संदर्भ में, नातेदारी नैतिकता के नियम साझा यौनिकता से उत्पन्न संबंधों के साथ-साथ परिवार में उत्पन्न संबंधों को छिपाने पर भी जोर देते हैं। एक बहू को मूल रूप से शत्रुतापूर्ण माना जाता है, क्योंकि उसके और उसके बीच संघर्ष होता है सिर्फ यही नहीं कि बहू अपने पति पर कोई हक नहीं जता सकती, बल्कि उसे अपने बच्चों के साथ अपने खास रिश्ते को भी दबाकर रखना पड़ता है। इसी तरह, सास को मूल रूप से शत्रुतापूर्ण माना जाता है, जो यौन संबंध और संतानोत्पत्ति द्वारा बने रिश्तों के टकराव की वजह से होता है। हालांकि, इस दुश्मनी को भी खुलकर दिखाने की इजाज़त नहीं होती। बल्कि, मैंने तो अक्सर यह देखा है कि बहू के लिए जबरदस्त दिखावटी प्यार जताया जाता है, खासकर शादी के शुरुआती सालों में। एक युवती अपनी सास की हर हरकत को प्रतीकात्मक रूप में बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने की आदत से इतनी परेशान थी कि उसने कहा कि उसे अपने पति के घर में साँस लेना मुश्किल हो रहा है। उसने कहा कि उसकी हर प्रतिक्रिया के लिए दिखाई जाने वाली ज़रूरत से ज़्यादा फ़िक्र उसे ऐसा महसूस कराती थी मानो वह जो कुछ भी कर रही हो, वह एक शैलीबद्ध, कर्मकांडीय क्रिया हो। स्वाभाविक प्रेम की तरह स्वाभाविक शत्रुता को दबाना भी उपहास या त्याग के रूप में देखा जा सकता है। इस मामले में, बहू को लगा कि चूँकि उसकी सास केवल चिंता का दिखावा कर रही थी, इसलिए उसके कार्य वास्तव में हास्यास्पद थे। दूसरी ओर, सास अक्सर कहती थी कि उसने अपनी बहू के लिए बहुत त्याग किए हैं और अपनी बेटियों से भी बेहतर उसकी देखभाल की है।

ऐसा नहीं है कि बहू को उसके पति के घर में डाँटा नहीं जाता। पंजाबियों में एक कहावत है, '*ती नू कहना ते नून नू सुनाना*': बेटी से वो शब्द कहना जो बहू के लिए होते हैं। उदाहरण के लिए, अगर कोई महिला अपने बड़े रिश्तेदारों की मौजूदगी में सिर ढकने को लेकर सावधान नहीं है, तो उसकी सास अपनी बेटी

से कह सकती है, 'मुझे यकीन है कि तुम हमें शर्मसार करने वाली हो। तुम्हें अपने पति के घर में सिर ढकना भी याद नहीं रहेगा।' इस प्रकार, बहू पर सीधा हमला करने के बजाय, फटकार के सूक्ष्म रूपों का इस्तेमाल किया जाता है। परिवार के भीतर के पारस्परिक संबंधों पर बिरादरी के सदस्यों और विशेष रूप से सास के रिश्तेदार नजर रखते हैं, जो अपनी बहू पर सास द्वारा की गई वास्तविक या काल्पनिक क्रूरताओं के बारे में व्यापक रिपोर्ट देकर पुराने बदला लेने में तत्पर रहते हैं।

अब तक की चर्चा से यह स्पष्ट है कि नातेदारी दो स्तरों पर कार्य करती है: जैविक और सामाजिक। सम्मानजनक आचरण जैविक द्वारा निर्मित प्राकृतिक संबंधों का त्याग मांगता है और नातेदारी नैतिकता उनकी उत्कृष्टता पर बल देती है। जैसा कि मौस और बर्क ने अलग-अलग तरीकों से ज़ोर दिया है, त्याग और बलिदान सामाजिक व्यवस्था को उसकी बुराइयों से मुक्त करने के साधन हैं। पंजाबियों का मानना है कि सामाजिक व्यवस्था की तरह, व्यक्ति का व्यक्तित्व भी त्याग के माध्यम से शुद्ध होता है और 'निम्न' से 'उच्च' स्तर तक पहुँचता है। इसलिए, सम्मानजनक आचरण प्राकृतिक मानवीय मूल्यों की कीमत पर होता है क्योंकि इसके लिए सामान्य भावनाओं और संवेदनाओं का त्याग करना पड़ता है। रोज़मर्रा की ज़िंदगी में आवश्यक त्याग छोटे होते हैं जिससे छोटी जीत और छोटी हार मिलती है। हालाँकि, कभी-कभी व्यक्ति ऐसी स्थिति में आ जाता है जहाँ जीत या पराजय बड़ी होती है और उसके अनुरूप बलिदान भी बहुत बड़ा होता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि मान-सम्मान (या इज़्ज़त) अक्सर मानवीय भावनाओं की कीमत पर प्राप्त होता है। इसलिए, कोई व्यक्ति अपने आचरण (या व्यवहार) को समझाने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के लक्ष्यों पर जोर देते हुए, अपने कार्यों के लिए या तो रिश्तेदारी के जैविक क्षेत्र से या रिश्तेदारी के सामाजिक क्षेत्र से वैधता प्राप्त कर सकता है।

एक दैनिक जीवन का उदाहरण लें, तो कुछ महिलाओं का मानना है कि एक बहू के लिए उचित व्यवहार यह है कि वह अपने बच्चे के साथ अपने रिश्ते को इस हद तक व्यक्तिगत न बनाए कि घर की किसी भी महिला सदस्य को उसकी देखभाल का जिम्मा सौंपा ना जा सके। इस प्रकार, जो महिला यह आभास देती है कि वह अपने बच्चे की देखभाल करने में दूसरों की तुलना में खुद को अधिक सक्षम मानती है, उसे अक्सर कहा जाता है, "तेरा ज़्यादा सगा है?" फिर भी, लोग यह भी जानते हैं कि यह नैतिक नियमों की अभिव्यक्ति नहीं है। वास्तव में, उनका मानना है कि एक बच्चा अपनी माँ के ज़्यादा करीब महसूस

करता है, क्योंकि उसके प्रति उसके प्यार में सहज प्रवृत्ति की शक्ति होती है। नैतिक नियम, जो माँ-बच्चे के संबंध को गैर-व्यक्तिगत बना देता है, प्राकृतिक तथ्यों का उल्लंघन है। इसलिए, कुछ महिलाएँ नैतिक रिश्तेदारी के मानदंडों के आधार पर इस अवैयक्तिकता को वैध ठहरा सकती हैं। अन्य महिलाएँ इस बात पर ज़ोर देती हैं कि बहू को खुद बच्चे की देखभाल करनी चाहिए क्योंकि बच्चा एक पूर्व-सामाजिक अवस्था में है और माँ उसके लिए अपूरणीय है। इस प्रकार, उनके लिए अपने आचरण की वैधता विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों (इज़्ज़त, सम्मान और शिष्टाचार या प्राकृतिक मानवीय मूल्यों) से प्राप्त करना संभव हो जाता है, जो लोगों को अलग होने और अपने आचरण की वैधता विभिन्न प्रकार के नियमों से प्राप्त करने की अनुमति देता है।

आइए अब एक और उदाहरण लेते हैं जिसमें दांव वाकई बहुत बड़ा था। पंजाबी परिवारों में बेटी का एक विशेष स्थान होता है, उसे पारिवारिक इज़्ज़त का प्रतीक माना जाता है (देखें यालमन 1964; खेड़ा एन.डी.)। बेटी का अपमानजनक आचरण परिवार के सम्मान को हमेशा के लिए धूमिल कर सकता है, जिससे माता-पिता बिरादरी के सामने 'मुँह दिखाने' के लायक नहीं रह जाते। अक्सर कहा जाता है कि पिता का कर्तव्य है कि वह एक दुष्ट बेटी को मार डाले, बजाय इसके कि उसे परिवार के नाम पर कलंक लगाने दे। हालाँकि, लोग अक्सर यह भी जोड़ देते हैं कि बहुत कम पिता इस आदेश का पालन कर पाएँगे क्योंकि यह पिता के अपनी बेटी के प्रति स्वाभाविक प्रेम के बिल्कुल विपरीत है। हुआ यूँ कि अपने फील्डवर्क के दौरान मैंने एक मामले के बारे में सुना, जिसकी अखबारों में खूब चर्चा हुई, जिसमें एक लड़की की उसके भाइयों द्वारा कथित तौर पर हत्या की बात कही गई थी। यह लड़की, जो पंजाबी थी, कथित तौर पर एक तमिल व्यक्ति से प्रेम करती थी और उससे शादी करने पर आमादा थी। वह एक चिकित्सक थी और एक अस्पताल में रहती थी। ऐसा लगता है कि उसके भाई एक दिन अस्पताल गए और उसे इस बहाने घर बुलाया कि उनकी माँ गंभीर रूप से बीमार है। फिर उसकी माँ और उसके भाइयों पर आरोप लगाया गया कि उन्होंने उसे समुदाय से बाहर शादी करने से रोकने के लिए उसकी हत्या कर दी। भाइयों के खिलाफ आपराधिक मुकदमा चलाया गया, लेकिन ठोस सबूतों के अभाव में उन्हें रिहा कर दिया गया।

चूँकि इस मामले पर व्यापक रूप से चर्चा हो रही थी, इसलिए मैं अक्सर जो जानकार लोग थे उनसे भाइयों के आचरण के बारे में उनकी राय पूछता था। सब इस बात पर सहमत थे कि बहन को परिवार की इज़्ज़त बचाने के लिए मारा गया था। भाइयों के इस काम पर जानकारी देने वाले लोगों की नैतिक राय अलग-अलग थी। मेरे कुछ जानकारी देने वालों की राय यह भी थी कि बहन निर्दोष थी, लेकिन यह हत्या उच्चतर लक्ष्यों के लिए था। निश्चित रूप से, उन्होंने तर्क दिया, भाइयों को अपनी प्यारी बहन को मारने में अपने आत्म-बोध की बलि देनी पड़ी। अन्य जानकार स्पष्ट रूप से भयभीत और विमुख थे। एक बूढ़े व्यक्ति ने कहा कि वह अपनी बेटी की हत्या अपने हाथों करवाने के बजाय शर्मिंदगी में जीना पसंद करता। इससे पता चलता है कि छोटी-छोटी जीत और हार की तरह, जीवन की बड़ी जीत और हार में भी, एक व्यक्ति ऐसे चुनाव कर सकता है जो उसके आचरण की वैधता को जैविक या सामाजिक रिश्तेदारी से प्राप्त करते हैं।[12]

बिरादरी के संदर्भ में सामाजिक रिश्तेदारी

हमने परिवार के संदर्भ में प्राकृतिक नातेदारी और सामाजिक नातेदारी के नियमों के बीच द्वंद्व का वर्णन किया है। आइए अब बिरादरी के संदर्भ में पारिवारिक नातेदारी और सामाजिक नातेदारी पर चर्चा करें। ऐसा महसूस किया जाता है कि एक बिरादरी के सदस्य एक ही शरीर के कणों को साझा करते हैं, लेकिन इसे जैविक मिथक से थोड़ा अधिक नहीं माना जाता है, बल्कि यह एक अतिशयोक्ति ही है। यह, हालांकि,

[12] टी.एन. मदन ने मुझे सुझाव दिया कि चुनाव इतना स्वतंत्र नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए, विवाह-पूर्व गर्भधारण के मामले में, पिता बिरादरी के दबाव में आकर कोई (हिंसक?) कदम उठाने के लिए मजबूर हो सकता है। मैं विवाह-पूर्व गर्भधारण के दो मामलों की रिपोर्ट करना चाहूँगी जिनके बारे में मुझे विश्वसनीय जानकारी है। एक मामले में गर्भपात करा दिया गया और अफ़वाहों के बावजूद, किसी ने लड़की के माता-पिता से इस घटना के बारे में सीधे तौर पर नहीं पूछा। दूसरे मामले में, जिस लड़के ने लड़की को गर्भवती किया था, उसे उससे शादी के लिए राज़ी कर लिया गया। यह लड़का एक अलग भाषाई क्षेत्र का था, जिसका इस्तेमाल शादी में बहुत कम लोगों को आमंत्रित करने के बहाने के रूप में किया गया। छह महीने बाद लड़की ने एक बच्चे को जन्म दिया। उसके माता-पिता ने यह बताया कि बच्चा समय से पहले (प्री-मैच्योर) पैदा हुआ था। माता-पिता को उनकी पीठ पीछे उपहास और गपशप का शिकार होना पड़ा, लेकिन बिरादरी के किसी भी सदस्य ने उनके सामने उनका अपमान नहीं किया। सामाजिक मेल-जोल कम से कम होने के कारण वे अपने तत्काल परिवार तक सिमट कर रह गए। वे सिर्फ अपने ही रिश्तेदारों की शादियों और अंतिम संस्कारों में शामिल होते थे।

पंजाबी लोकाचार में, किसी लड़की के विवाह-पूर्व संबंधों के बारे में गपशप करना, अगर कोई हो, उचित नहीं माना जाता है। दरअसल, उनका मानना है कि एक की बेटी सभी की बेटी होती है ('तीयां सब दियां सज्जियां होन्दियां ने')। इसलिए दूसरे आदमी की बेटी के बारे में गपशप करना गलत है, और दूसरे आदमी की बेटी पर आक्षेप लगाना अपनी ही बेटी के बारे में गपशप करने जैसा है। बेशक, महिलाओं का पसंदीदा शगल यह है कि वे घरवालों के नैतिक चरित्र और उनके विभिन्न मतभेदों पर चर्चा करें, खासकर उन लोगों के बारे में जो गपशप सत्रों में मौजूद नहीं होते हैं। हालाँकि, इन चर्चाओं के दौरान, कोई यह टिप्पणी करने के लिए बाध्य है कि दूसरे लोगों की बेटियों के आचरण पर चर्चा करते समय सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि कोई कभी गारंटी नहीं दे सकता कि वही बात उसके अपने घर में नहीं हो रही है।"

उन संबंधों को जैविक शब्दों में दोबारा व्यक्त करने की आवश्यकता की ओर इशारा करता है जो मूल रूप से नैतिक हैं। परिवार के संदर्भ में, अंतर-वैयक्तिक संबंध दो स्तरों पर संचालित होते प्रतीत होते हैं: पहला 'पर्दे के पीछे' सहज, अनसीखे व्यवहार द्वारा, जो जैविक बंधनों से अपनी शक्ति प्राप्त करते हैं; और दूसरा 'पर्दे के सामने' शिष्टाचार और सम्मान की सीखी हुई अवधारणाओं द्वारा। बिरादरियों के संदर्भ में, व्यवहार को नियंत्रित करने वाली सभी अवधारणाओं को सामाजिक रूप से निर्मित अवधारणाएँ माना जाता है। यह 'दुनियादारी' वाक्यांश द्वारा व्यक्त किया जाता है, जिसका अर्थ है 'दुनिया के तौर-तरीके'। इस प्रकार कहा जाता है कि रिश्तेदारों से मिलने जाना चाहिए, या उपहार देने चाहिए, इसलिए नहीं कि ये स्वाभाविक प्रेम की वास्तविकता से निकलते हैं, बल्कि इसलिए कि सामाजिक दिखावे को बनाए रखना होता है। अब हम उन अवधारणाओं पर चर्चा करेंगे जिनका उपयोग बिरादरी के भीतर संबंधों को व्यवस्थित करने के लिए किया जाता है।

यह शुरू में ही बताया जा सकता है कि हम बिरादरी के भीतर संबंधों के क्रम को "कानूनी मानदंडों" और "सांख्यिकीय मानदंडों" की अवधारणाओं के माध्यम से वर्णित करने का प्रस्ताव नहीं रखते हैं। ऐसा नहीं है कि कानूनी मानदंडों की अवधारणा मानदंडों के पदानुक्रम का ध्यान रखने में सक्षम नहीं है, जो स्पष्ट रूप से बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन कानूनी और सांख्यिकीय मानदंडों के बीच का अंतर यह दर्शाता है कि सामाजिक आचरण का वर्णन करने का सबसे अच्छा तरीका भेद के माध्यम से है। व्यवहार के "चाहिए" और "है" पहलुओं के बीच। सामाजिक व्यवहार के अध्ययन में जो बात हमें अधिक विशेष लगती है, वह यह है कि यह प्रणाली कई अवधारणाएँ (नुस्खों (prescriptions) से अलग) प्रस्तुत करती है जिनका उपयोग व्यक्ति किसी ख़ास स्थिति को परिभाषित करने के लिए करते हैं।[13] यह न केवल व्यक्ति को भिन्न होने की अनुमति देता है, बल्कि स्थिति की भिन्न परिभाषाओं के संदर्भ में विविधताओं को वैध रूप से समझाने का भी अवसर देता है।

[13] "स्थिति की परिभाषा" की अवधारणा का इस्तेमाल थॉमस के बाद से विभिन्न लेखकों द्वारा अलग-अलग उद्देश्यों के लिए किया गया है। मेरा अपना प्रयोग काफी हद तक शुट्ज़ (1962), बर्जर और लकमैन (1966) से प्रेरित है।

प्राकृतिक नातेदारी के पार जाने का मूल सिद्धांत बिरादरी के भीतर अपना बल बनाए रखता है, और यह मुख्य रूप से नातेदारी के शब्दों के प्रयोग और उपहार देने में व्यक्त होता है। पंजाबी रिश्तेदारी में संदर्भ शब्दों का मूल समूह सामान्य उत्तर-भारतीय पैटर्न का अनुसरण करता है (देखें एग्लर 1960, लीफ 1972; वटुक 1969)। इस शोधपत्र में प्रस्तुत नातेदारी शब्दों के आँकड़े वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में जानकारों द्वारा दिए गए वास्तविक बयानों के अभिलेखों के माध्यम से एकत्र किए गए हैं।[14]

हाल तक, मानवशास्त्रीय साहित्य में नातेदारी शब्दावली का विश्लेषण अपेक्षाकृत संदर्भ-मुक्त परिस्थितियों में एकत्रित जानकारी पर आधारित रहा है, जिसका एक उल्लेखनीय अपवाद श्राइडर (1968) का अमेरिकी नातेदारी पर कार्य है। हमें ऐसा लगता है कि जिन परिस्थितियों में नातेदारी शब्दावली से संबंधित आँकड़े एकत्र किए गए हैं, उन्हीं के कारण मानवशास्त्री यह मानने लगे हैं कि नातेदारी शब्द का प्राथमिक संदर्भ हमेशा एक अनुभवजन्य (empirical) संदर्भ होता है। इस तर्क को स्पष्ट रूप से स्वीकार करने के बाद, उन्होंने इस बात पर बहस की है कि क्या नातेदारी शब्द का प्राथमिक अर्थ एकल परिवार के संदर्भ से है और बाद में उसका विस्तार होता है या यह निवास के नियमों पर आधारित समूह (लीच 1958) या विवाह के नियमों पर आधारित श्रेणी (लेवी स्ट्रॉस 1949, नीधम 1967) के साथ शब्द के जुड़ाव से उत्पन्न होता है। दूसरे शब्दों में, जिस केंद्रीय मुद्दे पर बहस केंद्रित रही है, वह यह है कि क्या नातेदारी शब्द व्यक्तिगत नाम हैं या श्रेणी शब्द। इन शब्दों में रिश्तेदारी की शब्दावली से संबंधित मुख्य पक्ष के औपचारिकीकरण से नातेदारी के शब्दों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक अनदेखी हो जाती है, अर्थात्, कि उनके कई तरह के उपयोग होते हैं। इस विविधता को खोजने के लिए, हमें उन विशिष्ट मामलों की विस्तृत जाँच करनी होगी जिनमें लोग इन शब्दों का उपयोग करते हैं, और इस प्रकार उन वाक्यांशों का अन्वेषण करना होगा जिनमें कोई ये शब्द आते हैं. हम यह दिखाने की उम्मीद करते हैं कि इस तरह की जांच से पता चलेगा कि एक नातेदारी शब्द द्वारा निभाई जाने वाली विभिन्न भूमिकाओं को सख्त परिभाषा नहीं दी जा सकती है। बल्कि ये शब्द 'हैंडीमैन' शब्द हैं, जैसा कि विट्गेन्स्टाइन कहेंगे, विभिन्न प्रकार के कामों के साथ, लेकिन कोई कठोर रूप से परिभाषित

[14] यह विधि न केवल साधारण भाषा दर्शन के कार्यों को पढ़ने से बल्कि मालिनोवस्की (1918) से भी प्राप्त होती है।

जिम्मेदारियां नहीं हैं। इसके अलावा, किसी विशेष शब्द के उपयोगों के बीच पारिवारिक-समानताएं हैं, जैसा कि हम अपनी सामग्री की मदद से आगे दिखाएंगे।

यहाँ दूसरी बात जो स्पष्ट करना आवश्यक है, वह यह है कि नातेदारी शब्द मुख्यतः अवधारणाएँ हैं जिनका उपयोग कभी-कभी विशिष्ट वंशावली पदों, अनुभवजन्य समूहों, या श्रेणियों के निवासियों का वर्णन करने के लिए किया जा सकता है। हालाँकि, यह तथ्य कि उनका उपयोग ठोस संस्थाओं का वर्णन करने के लिए किया जा सकता है, इसका अर्थ यह नहीं है कि वे मूलतः वर्णनात्मक शब्द हैं - एक ऐसी धारणा जो घटकीय (componential) विचारधारा के अनुयायियों और अन्य लोगों के अधिकांश कार्यों के पीछे निहित है। जैसा कि हम आगे देखेंगे, वर्णन उन कार्यों में से केवल एक है जो नातेदारी शब्दों को करने होते हैं।

संयोगवश, नातेदारी शब्दों के मुख्यतः वैचारिक स्वरूप के बारे में हमारा तर्क स्ट्रॉसन (1950) द्वारा वाक्यों और कथनों के बीच किए गए भेद से कुछ हद तक मिलता-जुलता है। स्ट्रॉसन ने तर्क दिया कि एक वाक्य सार्थक या अर्थहीन हो सकता है, लेकिन वह सत्य या असत्य नहीं हो सकता। दूसरी ओर, तर्क दिया जा सकता है कि एक कथन सत्य या असत्य हो सकता है, लेकिन वह कभी अर्थहीन नहीं होता। इसी भेद के कारण वह यह दर्शा पाए कि एक ही वाक्य का प्रयोग विभिन्न कथनों के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, "फ्रांस का राजा बुद्धिमान है" का प्रयोग कहानी सुनाने या मज़ाक करने के लिए किया जा सकता है, जहाँ अनुभवजन्य सहसंबंधों का निर्धारण बिल्कुल अप्रासंगिक है।

इसी तरह हमने तर्क दिया है कि किसी नातेदारी शब्द के अर्थ उसके उपयोग से जुड़े होते हैं और उसके अनुभवजन्य सहसंबंधों से उत्पन्न नहीं होते। यही कारण है कि विभिन्न प्रकार की अनुभवजन्य स्थितियों का वर्णन करने के लिए एक ही शब्द का उपयोग करना संभव हो जाता है। उदाहरण के लिए, पंजाबी में बेटी (बेटी) शब्द का इस्तेमाल अपनी बेटी के लिए किया जा सकता है। हालाँकि, उपहार देने के संदर्भ में, एक पुरुष जिसके पिता जीवित नहीं हैं, वह अपनी बेटी, अपनी बहन और अपने पिता की बहन को

शामिल करने के लिए एक ही शब्द का उपयोग कर सकता है। मुद्दा यह है कि बेटी, बहन और पिता की बहन एक ऐसी श्रेणी नहीं बनाती हैं जिसकी बेटी सदस्य हो। उपहार देने के संदर्भ में ये सभी महिलाएं उपहार प्राप्त करने वालों के अर्थ में बेटियां हैं, लेकिन एक अलग संदर्भ में कर्ता (ego) स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर सकती है कि उसकी बहन उसकी बेटी नहीं बल्कि उसकी बहन है। यह तथ्य कि एक ही शब्द का प्रयोग एक कथन बनाने के लिए किया जा सकता है, जिसमें कुछ संदर्भों में पिता की बहन और खुद की बहन को शामिल किया जाता है और अन्य में उन्हें बाहर रखा जाता है, यह इस तथ्य की ओर स्पष्ट संकेत करता है कि शब्द के अर्थ उसके अनुभवजन्य सहसंबंधों से व्युत्पन्न नहीं होते हैं; बल्कि, अर्थ उन उपयोगों से गहराई से जुड़ा होता है जो शब्द के वैचारिक अर्थ द्वारा निर्धारित होते हैं।

हम उपरोक्त तर्क को भाई और बहन शब्दों पर विचार करके कुछ अधिक विस्तार से प्रदर्शित करेंगे। ये शब्द केवल कर्ता के माता-पिता के बच्चों को संदर्भित नहीं करते हैं, बल्कि वर्गीकरण के तौर पर लागू होते हैं और इनका उपयोग वक्ता के लिंग पर निर्भर नहीं करता है। पुरुष कर्ता की अपनी पीढ़ी के साथ स्पष्ट रूप से जुड़े हुए हैं। पुरुष कर्ता की पीढ़ी को पंजाबी शब्दों के अधिक परिचित हिंदी अनुवाद में निम्नलिखित शब्दों से संदर्भित किया जा सकता है: भाई (भाई), जीजा (बहन का पति), साला (पत्नी का भाई), साडू (पत्नी की बहन का पति), और कुड़म (बच्चे के पति या पत्नी का पिता)। पुरुष कर्ता की अपनी पीढ़ी की महिलाओं को बहन (बहन), भाभी (भाई की पत्नी), वोटी (पत्नी),साली (पत्नी की बहन), सलहेज (पत्नी के भाई की पत्नी), और कुड़मनी (बच्चे के जीवनसाथी की माँ)।

अपनी पीढ़ी के पुरुषों के लिए प्रयुक्त सभी शब्दों में से, भाई शब्द का प्रयोग सबसे व्यापक है और यह एकमात्र ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग गैर-रिश्तेदारी और आकस्मिक संदर्भों में किया जाता है। आइए पहले इन गैर-रिश्तेदारी संबंधी विवादों में इसके अर्थ की जाँच करें। जब कोई व्यक्ति किसी अजनबी पुरुष को, जो लगभग उसकी ही पीढ़ी का हो, संबोधित करना चाहता है, तो वह ऊपर बताए गए सभी शब्दों में से हमेशा भाई (पंजाबी में ‘फाई साहेब’ या 'प्राजी') शब्द चुनता है। यह अजनबी कोई भी हो सकता है, लेकिन जब तक संपर्क सौहार्दपूर्ण हो, उसे आमतौर पर भाई कहकर संबोधित किया जाता है। इस विशेष प्रयोग के बारे में कुछ ग़लतफ़हमी इस तथ्य से उत्पन्न हुई है कि हम यह मान लेते हैं कि यहाँ 'भाई' शब्द का प्रयोग संबोधित व्यक्ति को भाई नामक व्यक्तियों की श्रेणी में शामिल करने के लिए किया जा रहा है। यही कारण है कि मानवशास्त्रियों ने रिश्तेदारी और गैर-रिश्तेदारी के संदर्भों में भाई

शब्द के प्रयोग में अंतर्निहित समानताओं की खोज की है। हमारा प्रस्ताव है कि इन गैर-रिश्तेदारी और अनौपचारिक संदर्भों में भाई शब्द का प्रयोग साला और जीजा जैसे अन्य शब्दों के प्रयोग को बाहर करने के लिए किया गया है। जैसा कि सर्वविदित है, साला शब्द या तो गाली या विशेषाधिकार प्राप्त परिचितता का बोध कराता है, यही कारण है कि गैर-रिश्तेदारी संदर्भों में इसका प्रयोग झगड़ों या घनिष्ठ मित्रों के बीच होता है। इसी प्रकार, जीजा शब्द वक्ता को संबोधित व्यक्ति के साथ साला के संबंध में खड़ा करेगा। इसलिए, हमें ऐसा लगता है कि यहाँ भाई शब्द का प्रयोग विशेष रूप से साला और जीज के प्रयोग को बाहर करने के लिए किया गया है, न कि वक्ता को अपने भाइयों में शामिल करने के लिए। यही कारण है कि भाइयों के वर्ग की किसी भी प्रकार की सामान्य विशेषताओं के संदर्भ में इसके प्रयोग की व्याख्या करना भ्रामक है, क्योंकि इससे इस संदर्भ में इसके द्वारा किए जाने वाले बहिष्करण के कार्य पर उचित बल नहीं मिलता। बिरादरी के संदर्भ में, भाई शब्द का प्रयोग कई उद्देश्यों के लिए किया जाता है। कुछ अवसरों पर, इसका प्रयोग केवल रिश्तेदारों की एक श्रेणी के भीतर पीढ़ियों को अलग करने के उद्देश्य से किया जा सकता है। एक उदाहरण लेते हैं: मुझे एक लड़की की शादी के अवसर पर उपहार दिखाए जा रहे थे। पंजाबियों में, भारत के अन्य समूहों की तरह, मामा को दुल्हन के लिए विशेष उपहार लाने होते हैं। इन उपहारों को चूड़ा कहते हैं, जो हमेशा शामिल की जाने वाली हाथीदांत की चूड़ियों से लिया गया है। अगर मामा जीवित नहीं है, तो ये उपहार मामा के बेटे द्वारा दिए जाते हैं। इस अवसर पर, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, उपहार प्रदान करने की मुख्य जिम्मेदारी दुल्हन की माँ के भाई के बेटे द्वारा ली गई थी क्योंकि माँ का भाई बहुत बूढ़ा था और आर्थिक रूप से अपने बेटे पर निर्भर था। चूड़ा दिखाते समय, मुझे बताया गया कि ये वे उपहार थे जो माँ के भाई के बेटे (मामेरा भाई) ने लाए थे। यह स्पष्ट था कि इस संदर्भ में भाई शब्द का प्रयोग केवल मामेरा की श्रेणी में उपहार देने वाले की पीढ़ी को उसके पिता की पीढ़ी से अलग करने के लिए किया जा रहा था। यह स्पष्ट था क्योंकि चूड़ा लाने का दायित्व उसके 'भाई' होने की भूमिका से नहीं, बल्कि मामेरा श्रेणी के सदस्य होने की भूमिका से उपजा था। वास्तव में, चूड़ा न तो लड़की के अपने भाई द्वारा या उसके किसी चचेरे भाई द्वारा दिया जा सकता है, बल्कि केवल मेमेरे श्रेणी के सदस्य द्वारा ही दिया जा सकता है।

जैसे कुछ संदर्भों में, किसी ऐसे व्यक्ति के लिए ' भाई ' शब्द का प्रयोग करना उचित है जो वंशावली से संबंधित न हो, वैसे ही कुछ संदर्भों में अपने भाई के लिए ' भाई' शब्द का प्रयोग करना और इस रिश्ते की ओर ध्यान आकर्षित करना शिष्टाचार का उल्लंघन माना जाता है। मैं इसका एक उदाहरण देती हूँ। अपनी पत्नी के मायके में रात के खाने पर, एक आदमी अपनी साली (पत्नी की बहन) के साथ अक्सर होने वाले अश्लील चुटकुले सुना रहा था, जिसका उसे विशेषाधिकार प्राप्त हैं। एक बार जब उसने मज़ाक में उसे थप्पड़ मारा, तो उसने कहा, 'देखो जीजा जी (बहन के पति के लिए शब्द), यह मेरा घर है और मेरा भाई मेरे बगल में बैठा है। वह तुम्हें पीटेगा।'

इस पर उसके जीजा ने जवाब दिया, 'ओह, चलो, वह तो आखिरकार मेरा साला है।' चूँकि साला शब्द गाली से जुड़ा है, इसलिए यह सुनकर तुरंत सबकी हँसी फूट पड़ी। मैंने लड़की से पूछा कि अगर उसे मज़ाक में थप्पड़ मारने वाला कोई दूर का भाई होता, जैसे उसकी माँ के भाई का बेटा, या उसके पिता की बहन का बेटा, तो क्या वह भी यही बात कहती? उसने तुरंत कहा, 'नहीं, क्योंकि इसका मतलब होगा कि वह भाई से कमतर है।' दूसरे शब्दों में, अपने भाई के साथ रिश्ते पर जीजा जैसी किसी दूसरी श्रेणी के विरोध में ज़ोर दिया जा सकता है, लेकिन उसी वर्ग के वंशावली-संबंधी रूप से दूर के सदस्य के विरोध में कभी नहीं। तर्क फिर से जैविक रिश्तेदारी के बंधनों से ऊपर उठने की वांछनीयता से उपजा है। बिरादरी में करीबी वंशावली रिश्तेदारों के बीच सीमाएँ खींचने के लिए रिश्तेदारी शब्दों का इस्तेमाल करना उचित नहीं माना जाता। मेरे सहभागी जानकार बार-बार दूसरे लोगों का परिचय मुझे अपनी बहन या भाई के रूप में कराते थे। व्यक्ति के चले जाने के बाद ही सूचना देने वाले वास्तविक वंशावली संबंध की व्याख्या करते थे या संबंध को स्पष्ट करने के लिए अंग्रेजी में 'कजिन' शब्द का प्रयोग करते थे।

यहाँ तक कि विवाह जैसे अनुष्ठानिक अवसरों पर भी, जब कुछ अनुष्ठानों में भाई की भागीदारी आवश्यक होती है, तो इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि न केवल दुल्हन (या दूल्हे) के अपने भाई को, बल्कि उसी वर्ग के वंशावली के अनुसार दूर के रिश्तेदार, जैसे कि चचेरे भाई-बहनों में से किसी एक को भी शामिल किया जाए। यह फिर से इस मूल मूल्य की ओर ध्यान आकर्षित करता है कि निकट वंशावली

पदों के इर्द-गिर्द सीमाएँ नहीं खींची जानी चाहिए। संभवतः अनुष्ठान के प्रयोजनों के लिए केवल माता-पिता-संतान का रिश्ता और पति-पत्नी का रिश्ता ही अद्वितीय माना जाता है। दूसरे शब्दों में, माँ या पत्नी की जगह किसी अन्य महिला को उन अनुष्ठानों में शामिल नहीं किया जा सकता जिनमें उनकी भागीदारी ज़रूरी है, जब तक कि वह मर न गई हो। उदाहरण के लिए, मैंने देखा कि किसी शादी में कन्यादान (कुंवारी कन्या का उपहार) की रस्म में लड़की के माता-पिता की जगह किसी ने नहीं लिया, जब तक कि माता-पिता मर न गए हों या माँ विधवा न हो। ऐसे मामलों में लड़की का भाई और उसकी पत्नी यह अनुष्ठान करते थे। शादी या शव-संस्कार अनुष्ठानों में निभाए जाने वाले अन्य सभी भूमिकाओं (जैसे, भाई, भाई की पत्नी, मामा, बहन, बहन का पति) के लिए, उस श्रेणी के एक करीबी और एक दूर के रिश्तेदार को शामिल करने की प्रथा है।[15]

बहन के संबंध में भाई शब्द का एक महत्वपूर्ण अर्थ यह है कि उसकी देखभाल और सुरक्षा उसके ऊपर सौंपी जाती है। किसी लड़की की शादी से पहले, उसके इज़्ज़त पर होने वाले किसी भी हमले का बदला लेना भाई का काम होता है। ये हमले गपशप, नाजायज संबंध या यहाँ तक कि छेड़छाड़ के रूप में भी हो सकते हैं। लड़की की शादी के बाद, उसके पति और उसके समूह को भी लड़की के सम्मान की रक्षा का दायित्व सौंपा जाता है। हालाँकि, जहाँ भाई की चिंता जैविक और नैतिक, दोनों तरह के संबंधों से उपजी है, वहीं पति की चिंता मूलतः नैतिक नियमों से उपजी दिखाई देती है। जैसा कि हम पहले दिखा चुके हैं, नैतिक संहिताओं को प्राकृतिक संहिताओं जितना अपरिवर्तनीय नहीं माना जाता है। जैसा कि हम पहले भी बता चुके हैं, कामुकता के बंधन दो मनुष्यों के बीच कुछ बंधन अवश्य बनाते हैं। हालाँकि, कामुकता दो लोगों को अपरिवर्तनीय रूप से नहीं बाँधती, क्योंकि यह माना जाता है कि जैविक रूप से कई अलग-अलग महिलाओं के साथ यौन इच्छा को संतुष्ट करना संभव है। दूसरी ओर, माता-पिता और बच्चों के बीच या भाई-बहनों के बीच के रिश्ते उन्हें अटूट रूप से बाँधते हैं। इसलिए, इन संबंधों की जैविक शक्ति अपरिवर्तनीय और अखंडनीय है। जैविक रिश्तेदारी की इन्हीं अवधारणाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि यद्यपि नैतिक रूप से पति और भाई दोनों को स्त्री का रक्षक माना जाता है, फिर भी केवल भाई ही स्त्री की रक्षा उसके पति से कर सकता है।

[15] मैं यह बताना चाहूंगी कि बंगाल में मैंने देखा है कि कन्यादान की रस्म लड़की के पिता द्वारा नहीं, बल्कि उसके बड़े भाई द्वारा निभाई जाती है।

जब किसी महिला के वैवाहिक परिवार में सब कुछ ठीक चल रहा हो, तो उसके भाई की भूमिका केवल उपहार देने वाले तक ही सीमित होती है, क्योंकि उससे उपहार प्राप्त करना उसका विशेषाधिकार है। हालाँकि, अगर किसी महिला का अपने पति और उसके माता-पिता के साथ गंभीर झगड़ा हुआ है, या उसके साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार किया जा रहा है, या उसके पति को लगता है कि उसे पारिवारिक संपत्ति में उसका हिस्सा नहीं मिल रहा है, तो उसके भाई उसके व्यक्तित्व और उसके हितों की रक्षा में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं। इस प्रकार उसके भाइयों को उसके पति और उसके परिवार के खिलाफ लड़ना पड़ सकता है, या उन्हें उसके भाइयों के खिलाफ उसके पति का समर्थन करना पड़ सकता है। मेरे पास केवल एक ऐसे विवाद का रिकॉर्ड है जिसमें पत्नी ने अपने पति को यह विश्वास दिलाया था कि संपत्ति का उसका हिस्सा उसके भाइयों द्वारा हड़पा जा रहा है।

उसके चार भाई अपनी बहन के पति के भाइयों के साथ मामला सुलझाने के लिए एक समूह में आए थे। उनके पहुँचते ही उनका औपचारिक स्वागत किया गया। लेकिन उन्होंने जवाब देने से इनकार कर दिया। तब लड़की के भाइयों में से एक ने कहा, "हम आपको याद दिलाने आए हैं कि निर्मल के भाई मरे नहीं हैं। हमें एहसास नहीं था कि हम अपनी प्यारी बहन को राक्षसों के हाथों में दे रहे हैं। हम आपसे व्यवहार में सुधार करने का अनुरोध करते हैं, अन्यथा हम आपको दोषी ठहराएंगे और इसके परिणाम आपके लिए भयानक होंगे।' मैं इस विवाद के और विस्तार में नहीं जाना चाहती। मुद्दा यह है कि यह कथन कि 'हम आपको याद दिलाने आए हैं कि निर्मल के भाई मरे नहीं हैं', भाई की भूमिका पर जोर देता है कि वह जीवन भर बहन का रक्षक रहे, यहाँ तक कि उसके पति के खिलाफ भी।

दुल्हन लेने वालों के प्रति दुल्हन देने वालों के सम्मानजनक व्यवहार के पीछे, दुल्हन देने वाले हमेशा उसके पति के घर में अपनी छोटी बेटी या बहन की रक्षा करने के लिए तैयार रहते हैं। यह संदेह कि किसी लड़की के साथ उसके पति के घर में दुर्व्यवहार किया गया था, तब उठता है जब भी लड़की की शादी के पहले कुछ वर्षों में मृत्यु हो जाती है।[16] उदाहरण के लिए, अक्सर एक हत्या का आरोप लगाया जाता है, बीमारी के कारण मृत्यु के मामले में अक्सर यह माना जाता है कि लड़की की उचित देखभाल नहीं की गई थी। उदाहरण के लिए, दुर्घटना से हुई मृत्यु के लिए यह माना जाता है कि लड़की के साथ

[16] यह बात पंजाब राज्य सरकार द्वारा हाल ही में पारित अध्यादेश से स्पष्ट होती है, जिसके अनुसार विवाह के प्रथम सात वर्षों में किसी महिला की मृत्यु होने पर आपराधिक जांच की जानी आवश्यक है।

उसके पति के घर में बेरुखी से पेश आया गया होगा क्योंकि वह इतनी आसानी से किसी दूसरी स्त्री के बदले में मारी जा सकती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पति के लोग आसानी से अधिक दहेज के साथ दूसरी बहू ला सकते हैं, लेकिन उसके अपने माता-पिता दूसरी बेटी नहीं ला सकते। पति के घर में यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत सावधानी बरती जाती है प्रत्यक्षतः यह व्यवहार शिष्टाचार की माँग से उपजा है, लेकिन एक अप्रत्यक्ष स्तर पर यह सुनिश्चित करता है कि लड़की के माता-पिता को यह देखने का अवसर मिले कि उनकी बेटी की उचित देखभाल हो रही है या नहीं। यह देखना दिलचस्प है कि बहू द्वारा किए गए गंभीर दुर्व्यवहारों पर उसके पति और उसके माता-पिता द्वारा सीधे तौर पर कार्रवाई नहीं की जाती। इसके बजाय, व्यभिचार जैसे गंभीर आरोपों के मामले में उसके पिता या भाई को आदेश दिया जाता है कि वे आकर उसे ले जाएँ, या कम गंभीर आरोपों के मामले में उसे अनुशासित करें। इस अर्थ में, लड़की अपने माता-पिता के लिए इज़्ज़त की प्रतिनिधि बनी रहती है।

एक लड़की अपने सगे-संबंधियों के साथ चाहे कितने भी करीबी रिश्ते क्यों न बना ले, उन्हें उसकी बीमारी या मौत की स्थिति में अपनी प्रतिष्ठा को लेकर बेहद सावधान रहना होगा। यहाँ तक कि बेहद भावनात्मक रूप से टूटने के क्षणों में भी, मैंने देखा है कि लोग गपशप की संभावना से खुद को बचाने के लिए कितनी सावधानी बरतते हैं। उदाहरण के लिए, एक बीस साल की युवती की अस्पताल में मौत हो गई। मौत अचानक हुई और उसके सगे-संबंधी सदमे और दुख से टूट गए। जब मैंने उसकी सास से पूछा कि क्या शव को सीधे श्मशान घाट ले जाया जाएगा, तो उन्होंने कहा, 'नहीं, हमें इसे पहले घर ले जाना होगा। नहीं तो लोग तरह-तरह के आरोप लगा सकते हैं। एक स्यापा (सामूहिक शोक मंत्र)के दौरान मैं उस समय दंग रह गयी जब मृत महिला की एक विशिष्ट भाभी ने मुझसे कहा कि भले ही वे अभी कितना भी रो लें, एक साल के भीतर उन्हें दूसरी बहू मिल जाएगी। यह तो लड़की के माता-पिता हैं जिनका दुःख वास्तविक है। उन्होंने एक बेटी को हमेशा के लिए खो दिया है। इन संदर्भों में, बेटी और बहन शब्दों का प्रयोग स्वयं से जुड़ी महिलाओं के साथ स्वाभाविक निकटता को दर्शाने के लिए किया जाता है। इस जुड़ाव के कारण ही एक लड़की अपने पति के घर में रक्षक के रूप में अपनी भूमिका पर जोर देने के लिए भाई शब्द का प्रयोग करने से बच सकती है, जब तक कि वह उकसाना न चाहे। भाई भी आमतौर पर अपनी भूमिका के इस पहलू पर जोर नहीं देता। लेकिन जिस क्षण मुखौटा हटाना आवश्यक हो जाता है, भाई अपनी बहन का मुख्य रक्षक बनकर उभरता है।

मुझे आशा है कि यहाँ प्रस्तुत सामग्री यह दर्शाती है कि नातेदारी शब्दों का प्रयोग वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में केवल वर्णनात्मक शब्दों के रूप में ही नहीं किया जाता है। इनके विविध उपयोग उनके 'कार्यकुशल' (handyman) स्वरूप को दर्शाते हैं। साथ ही, नातेदारी शब्दों के समूह में, कुछ प्रमुख शब्दों का प्रयोग अनेक प्रकार के कार्यों के लिए किया जाता है। ये वे शब्द हैं जिनके अर्थ संदर्भ से निकटता से जुड़े होते हैं। इन शब्दों का विश्लेषण इस धारणा के साथ नहीं किया जा सकता कि अर्थ शब्द से पूर्णतः जुड़ा हुआ है। अन्य शब्दों के अधिक विशिष्ट उपयोग हैं और इसलिए वे केवल कड़ाई से परिभाषित हैं। हमें इस विच्छेदन को किसी अन्य अवसर के लिए स्थगित करना होगा, जब पूरा ध्यान नातेदारी शब्दावली पर केंद्रित किया जा सकेगा।

पंजाबी रिश्तेदारी में उपहार-विनिमय के महत्व पर पहले के अध्ययनों में, विशेष रूप से एग्लर (1960) और हमज़ा अलवी (1972) के अध्ययनों में, ज़ोर दिया गया है। उपहार-विनिमय के माध्यम से ही बिरादरी के भीतर संबंधों को स्पष्ट और अभिव्यक्त किया जाता है। उपहार-विनिमय संबंधों का सूत्रीकरण "हक़" (शाब्दिक रूप से, अधिकार) की अवधारणा के माध्यम से किया जाता है।[17] हालाँकि, " हक़" की अवधारणा का उपयोग देने के अधिकार के साथ-साथ प्राप्त करने के अधिकार को व्यक्त करने के लिए भी किया जा सकता है। इस प्रकार, एक लड़की को अपने पिता, भाइयों और अन्य जन्मजात रिश्तेदारों से उपहार प्राप्त करने का अधिकार, "हक़" होता है। उसे अपने भाई के बच्चों को उपहार देने का अधिकार भी प्राप्त होता है, हालाँकि ये उपहार हमेशा अधिक प्रतिफल प्राप्त करते हैं और इसलिए इन्हें याचना के रूप में वर्णित किया जाता है (वटुक 1975)। व्यक्तिगत स्तर पर 'हक़' की अवधारणा के माध्यम से उपहारों का आदान-प्रदान व्यक्त किया जाता है, हालांकि पारिवारिक स्तर पर उपहार संबंध या तो प्रत्यक्ष आदान-प्रदान (जैसे कि रिश्तेदारों के बीच) या अप्रत्यक्ष आदान-प्रदान (जैसे कि वैवाहिक संबंधियों/सम्बन्धियों के बीच) के माध्यम से बनाए रखा जाता है। उपहार देने के अवसरों को ऐसे अवसरों के रूप में सोचना भ्रामक होगा जिनमें विनिमय की जाने वाली सटीक राशि स्पष्ट रूप से दी जाती है। वास्तव में, उपहार-विनिमय में भाग लेने वाले स्वयं स्थिति की एक परिभाषा देते हैं और उसके अनुसार कार्य करते हैं। तथ्य यह है कि प्रतिभागियों के निर्णय उनकी परिभाषाओं पर निर्भर करते हैं, कुछ व्यापक

[17] यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि पंजाबी समुदाय का यह रिश्ता अन्य संस्थाओं तक भी फैला हुआ प्रतीत होता है। उदाहरण के लिए, मैंने देखा है कि पंजाबी क्लर्क जब अपनी घूस की माँग करते हैं, तो उसे अपना हक़ बताते हैं।

रूप से निर्दिष्ट विकल्पों के कारण, शायद हर उस अवसर पर होने वाली भारी चर्चा और आलोचना होती है जब उपहारों का आदान-प्रदान होता है। अब हम उन अवधारणाओं पर चर्चा करेंगे जिनका उपयोग लोग स्थिति और उसमें अपनी भूमिका को परिभाषित करने के लिए करते हैं।

किसी भी औपचारिक अवसर पर, जिस पर उपहारों का आदान-प्रदान प्रथागत है (जैसे, विवाह, प्रसव, अंतिम संस्कार) पहली चीज जो कर्ता को परिभाषित करनी होती है वह है विशेष नातेदारी श्रेणी जिसमें वह अपने दूसरे के संबंध में खड़ा होता है, जिसे उपहार दिया जा रहा है। यह काफी सरल प्रक्रिया है जब तक कि पहले से संबंधित व्यक्तियों के बीच विवाह के कारण या गोद लेने के कारण नातेदारी श्रेणियों में ओवरलैप न हो। ओवरलैप के ऐसे मामलों में, कर्ता को भूमिका के बारे में चुनाव करना होता है जिसे चुनना उसके लिए सबसे उपयुक्त होगा। मैं यहां इस्तेमाल किए गए तर्क को दो उदाहरणों की मदद से समझाती हूं, जहां रिश्तों में ओवरलैप था। पहला उदाहरण पहले से संबंधित व्यक्तियों के बीच विवाह के कारण भूमिकाओं के ओवरलैप से संबंधित है और दूसरा गोद लेने के कारण ओवरलैप से संबंधित है।

उदाहरण 1

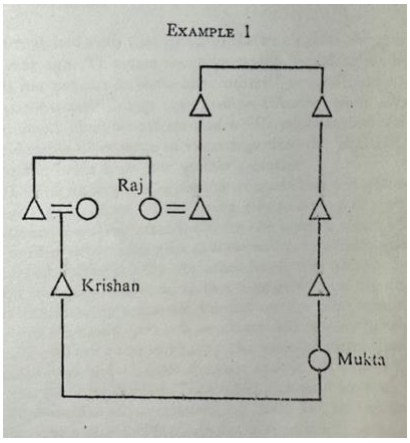

कृष्ण और मुक्ता का विवाह मुख्यतः राज की पहल पर तय हुआ था। मुक्ता वंशावली के अनुसार कृष्ण की FZHFBSSD थीं। हालाँकि दोनों अलग-अलग वंशावली पीढ़ियों से थे, फिर भी उनके बीच उम्र का अंतर केवल चार साल का था। वंशावली द्वारा परिभाषित पीढ़ियों और उम्र द्वारा परिभाषित पीढ़ियों के

बीच का ओवरलैप अपेक्षाकृत कम है पंजाबी वंशावली मैं जो मैंने एकत्रित की है। अतः, यह उदाहरण बिल्कुल भी अप्रारूपिक (atypical) नहीं है।

इस खास मामले में, राज मुक्ता की दादी और कृष्ण की मौसी (FZ) थीं। मैंने उनसे इस बारे में स्पष्टीकरण मांगा, मतलब- किसके आधार पर उसने उपहार देने के प्रयोजनों के लिए दो भूमिकाओं के बीच चयन किया। उसने कहा कि जहां दोनों रिश्ते इस मामले में करीबी थे, आपसे उम्मीद की जाती थी कि आप उपहार प्राप्तकर्ताओं के बजाय उपहार देने वालों के साथ खुद की पहचान करें। अन्यथा, उसने कहा, व्यक्ति पर धोखाधड़ी का आरोप लगाया जा सकता है। इस प्रकार, उसने निम्नलिखित प्रकार के उपहार दिए। कृष्ण के पिता की इकलौती बहन के रूप में, उसने दुल्हन को एक महंगी साड़ी, एक जोड़ी सोने के कंगन और 51 रुपये दिए। उसने कृष्ण को महंगे कपड़ों का एक सेट और 51 रुपये भी दिए। दूल्हे के पिता की बहन के रूप में उसने दुल्हन के लिए जो उपहार दिए, वे वारी (पारंपरिक रूप से दूल्हे के लोगों द्वारा दुल्हन को भेजे जाने वाले उपहार) में शामिल थे। दुल्हन की वर्गीकृत पैतृक दादी के रूप में, राज ने मुक्ता को एक साडी और सोने की एक जोड़ी बालियां दीं। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि कुछ प्रथागत उपहार थे जो राज ने नहीं दिए या प्राप्त नहीं किए। दुल्हन या दूल्हे को पहली बार देखने पर ससुराल वालों द्वारा धनराशि देना प्रथागत है। राज ने कृष्णा को कोई राशि नहीं दी क्योंकि सभी को लगा कि वह उसे पहली बार नहीं देख रही है। इसी तरह, उसने दूल्हे के घर में मुक्ता को भी मुंह दिखाने (चेहरा दिखाने की रस्म) के रूप में कोई राशि नहीं दी। दुल्हन के माता-पिता के लिए दूल्हे की करीबी महिला रिश्तेदारों के लिए उपहार भेजना प्रथागत है। मुक्ता के माता-पिता ने दूल्हे के पिता की बहन के लिए एक साडी भेजी थी। राज ने इस आधार पर साडी लेने से इनकार कर दिया कि मुक्ता उनकी शादी से रिस्तेदार नहीं, बल्कि बेटी है। अंततः उसे यह साड़ी स्वीकार करने के लिए राजी किया गया। सामान्य तौर पर, मुक्ता और कृष्णा के सभी रिश्तेदार इस बात पर सहमत भी थे।लेकिन, यह बात उस दूसरे उदाहरण पर लागू नहीं होती, जिसे मैं नीचे दूँगी।

जिस उदाहरण पर हम अब चर्चा करने जा रहे हैं, उसमें मनसा देवी की चार बेटियाँ थीं और उनके भाई राम लुभाया के केवल दो बेटे थे। राम लुभाया अक्सर अपनी बहन मनसा देवी से कहा करते थे कि वे रचना को अपनी बेटी मानते हैं। हालाँकि रचना को उनके मामा ने कभी औपचारिक रूप से गोद नहीं लिया था, फिर भी वे अपनी मामा के साथ अपने रिश्ते को अपने भाई-बहनों से ज़्यादा करीबी मानती

थी। इसलिए वे कलकत्ता में रहने वाली अपनी मामा से लंबे समय तक, कभी-कभी एक साल तक, मिलने जाती थी। उसे यह भी लगता था कि वे अपने भाई-बहनों से ज़्यादा अपने मामा के बेटों के ज़्यादा करीब हैं। जब रचना की शादी तय हुई, तो वे और उनके माता-पिता राम लुभाया से उम्मीद करते थे कि वे उसे पूरा-पूरा सहयोग देंगे, एक मामा की भूमिका में नहीं, बल्कि एक पिता की भूमिका में, क्योंकि वे खुद को 'लगभग उनकी बेटी' मानती थीं। दूसरी ओर, राम लुभाया को लगता था कि अगर वे रचना को काफ़ी ज़्यादा उपहार देंगे, तो यह उनकी दूसरी भतीजियों के साथ अन्याय होगा। इसलिए, उन्होंने चूड़े में दिए जाने वाले पारंपरिक उपहार दिए, और देखा कि यह राशि रचना की बड़ी बहन को दी गई राशि के बराबर थी, जिसकी एक साल पहले शादी हुई थी।

उदाहरण 2

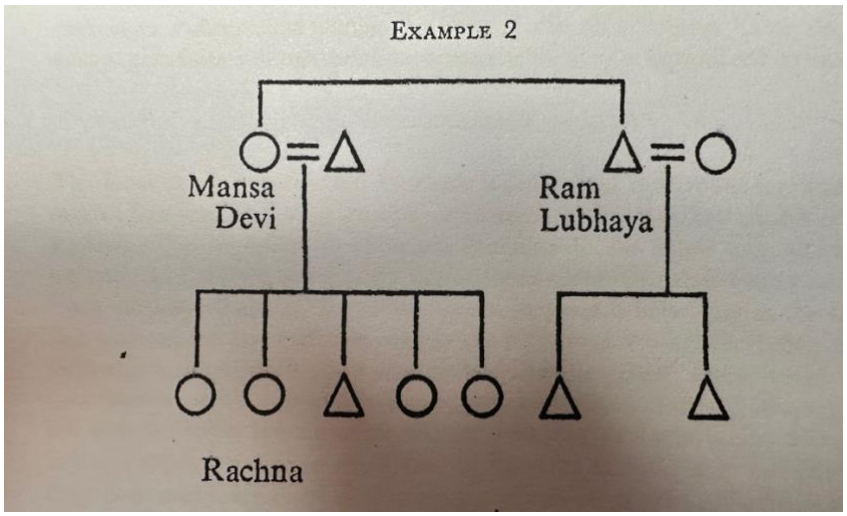

रचना के भाई-बहनों और उसके माता-पिता ने मुझे यह दिखाने के लिए बार-बार यह मामला सुनाया कि कैसे 'दूसरे' (परायें) कभी भी अपने माता-पिता और भाई-बहनों (अपने) की जगह नहीं ले सकते, जिनका स्नेह आखिरकार एक ही खून पर आधारित होता है। यहाँ हम देख सकते हैं कि स्थिति की

अलग-अलग परिभाषा के कारण दुल्हन को उसके मामा द्वारा दिए जाने वाले उपहारों के प्रकार और मात्रा को लेकर विचारों में काफी भिन्नता आ गई।

अंत में, मुझे लगता है कि सभी उपहार देने के अवसरों पर उपहार और दान के बीच एक अंतर्निहित विरोध किया जाता है। बिरादरी में किसी गरीब रिश्तेदार को उपहार देते समय, हमेशा एक दुविधा का सामना करना पड़ता है। एक ओर, एक गरीब व्यक्ति को बड़े उपहारों की अधिक आवश्यकता होती है क्योंकि ये उसे आवश्यक भौतिक सहायता प्रदान करेंगे। दूसरी ओर, रिश्तेदारों के बीच सच्चा वर्तन (उपहार-विनिमय) हमेशा पारस्परिक होता है, इसलिए अभी दिए गए बड़ी मात्रा में उपहार बाद में गरीब रिश्तेदार पर काफी आर्थिक बोझ डाल सकते हैं। जैसे मेरे जानकार अक्सर कहा करते थे, "आप कभी-कभी अपनी उदारता से किसी दूसरे की जान ले सकते हैं।" अगर दान के रूप में उपहार दिए जाते हैं, तो पारस्परिक आदान-प्रदान का मूल संबंध नष्ट हो जाता है। ऐसे मामलों में, अक्सर गरीब रिश्तेदार खुद ही स्थिति को परिभाषित करने की पहल करता है। इसलिए जब एक बहुत गरीब महिला के दामाद की मृत्यु हुई, तो उसने अपने सभी रिश्तेदारों (जैसे, अपनी बहन, अपने पति के भाई और अपने पति की बहन) से कहा, "कृपया पगड़ी में एक प्रतीकात्मक उपहार से ज़्यादा कुछ न दें; मैं बदले में कुछ नहीं दे सकती। मैं अपनी बेटी के वैवाहिक रिश्तेदारों को पगड़ी में जितनी राशि दे सकती हूँ, दूँगी।"

दूसरी ओर, एक और महिला, जो बहुत गरीब थी, अपनी बेटी की शादी से पहले अपने कई रिश्तेदारों के पास गई। उसने उन सभी से अपनी बेटी की शादी में 200 रुपये देने की गुज़ारिश की। उसने कहा कि वह बदले में कुछ नहीं दे सकती, लेकिन उनकी दया से शादी हो जाएगी। अधिकांश रिश्तेदारों के लिए इसमें कई विकल्प दिखे। जिन महिलाओं से संपर्क किया गया था, उनमें से एक ने कहा कि वह इतनी बड़ी राशि नहीं दे सकती और वह उन्हें वह देगी जो उनकी बिरादरी के 'वर्तन' रिश्ते के अनुसार उनका बकाया था। उसने हिसाब लगाया कि यह राशि ₹11 होगी। दूसरी महिला ने कहा कि हालाँकि वह ₹200 का खर्च नहीं उठा सकती, वह ₹51 देगी। उसने टिप्पणी की कि यदि कोई अजनबियों को दान दे सकता है, तो वह बिना किसी वापसी की उम्मीद के अपने ही रिश्तेदारों की मदद क्यों नहीं कर सकता। दो अन्य परिवार, जो दुल्हन की माँ के अधिक करीबी रिश्तेदार थे, उन्होंने उसे ₹200 दिए।

उपहार देने वालों का दुल्हन के साथ सटीक संबंध और दी गई राशि में भिन्नता नीचे वंशावली के अंश में दिखाई गई है।

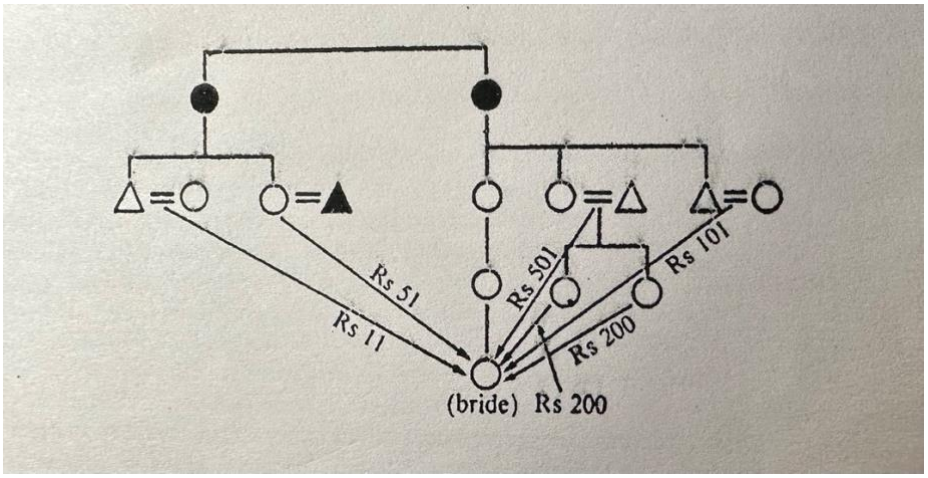

उपरोक्त से यह देखा जा सकता है कि उपहारों में दी गई धनराशि पूरी तरह से वंशावली की स्थिति से निर्धारित नहीं होती है। इस प्रकार, दुल्हन के MMB ने दुल्हन के MMZ से कम दिया क्योंकि वह अपनी बहन की तुलना में अपेक्षाकृत गरीब था। इसी प्रकार, उपरोक्त वंशावली सारांश में बाईं ओर दर्शाए गए उसके वर्गीकृत MMZ ने वर्गीकृत MMB से अधिक धन दिया क्योंकि पूर्व ने इसे दान के रूप में और बाद वाले ने इसे वर्टन संबंध के अंतर्गत दिए गए उपहार के रूप में परिभाषित किया था।

मुझे लगता है कि यह उपहार और दान के बीच अंतर्निहित विरोध है बताता है कि दुल्हन देने वाले दुल्हन प्राप्तकर्ताओं से कोई भी उपहार स्वीकार करने से इनकार क्यों करते हैं। दान वरिष्ठों द्वारा कनिष्ठों को दिया जाता है, कनिष्ठों द्वारा वरिष्ठों को श्रद्धांजलि दी जाती है; और उपहारों का आदान-प्रदान समानों के बीच होता है। वैवाहिक संबंधों को जिस अतिविवाही लोकाचार में रखा जाता है, उसमें दुल्हन प्राप्तकर्ताओं को दुल्हन देने वालों की तुलना में अपनी निम्न स्थिति को स्वीकार करना पड़ता है। इसके अलावा, अगर वे दुल्हन प्राप्तकर्ताओं से उपहार स्वीकार करने की अनुमति देते हैं, तो उन्हें भिखारी, दान के प्राप्तकर्ता माना जाएगा। यह बात मुझे तब स्पष्ट रूप से समझ में आई जब मैंने एक बुजुर्ग महिला को अपनी छोटी बेटी के विवाह के अवसर पर अपनी बेटी के पति की बहन से एक छोटा सा उपहार लेने से इनकार करते देखा। विनम्रतापूर्वक लेकिन दृढ़ता से, उसने उपहार को यह कहते हुए अस्वीकार

कर दिया, "हम बेटी के घर से उपहार कैसे स्वीकार कर सकते हैं? निश्चित रूप से, हम उद्धार के परे नहीं हैं, हमारा उद्धार संभव है।"[18]

निष्कर्ष

शहरी पंजाबियों की रिश्तेदारी व्यवस्था को स्थायी समूहों के बीच संबंधों या व्यवहार के मानकीकृत तरीकों के संदर्भ में वर्णित करना कठिन है। शहरी पंजाबियों के जीवन-इतिहास किसी मानक पैटर्न का पालन नहीं करते, इसलिए हम इन सामग्रियों के बारे में शायद ही कह सकते हैं, जैसा कि फोर्टेस ने पारंपरिक जीवन-इतिहास के बारे में कहा था, कि समान आयु और लिंग के व्यक्तियों के जीवन-इतिहास में शायद ही कोई महत्वपूर्ण भिन्नता दिखाई देती है। वास्तव में, शहरी पंजाबियों के लोग अपनी भिन्नता को संजोते हैं और उसका उत्साहपूर्वक बचाव करते हैं। रिश्तेदारी के ऐसे सामान्य पहलुओं जैसे किनशिप (रिस्तेदारी) शब्दावली और उपहार-दान में भी, कर्ता को व्यापक रूप से निर्दिष्ट सीमाओं के भीतर स्थिति को परिभाषित करने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है। चूँकि शहरी पंजाबी अपने जीवन में रिश्तेदारी व्यवहार को बहुत महत्व देते हैं और चूँकि उनकी रिश्तेदारी व्यवस्था उन्हें अलग होने की अनुमति देती है, इसलिए हमें उनकी वास्तविकता के इस पहलू को समझने के लिए अवधारणाएँ विकसित करना महत्वपूर्ण लगता है। हमें उम्मीद है कि यहाँ उपयोग की गई अवधारणाएँ खेल के उन नियमों (rules of the game) का कुछ अंदाज़ा देंगी जिनके भीतर विचार और व्यवहार के अंतरों को संकल्पनाबद्ध किया जा सका है।

क्योंकि मान-सम्मान और इज़्ज़त की अवधारणा पंजाबी रिश्तेदारी में एक केंद्रीय स्थान रखती है, हम इस प्रणाली में 'स्वयं'(self) और 'पहचान' (identity) के बीच के संबंध पर कुछ टिप्पणियों के साथ निष्कर्ष निकाल सकते हैं। ग्रीस में समकालीन ग्रामीण संस्कृति के अपने क्लासिक अध्ययन में, कैंपबेल (1964) ने सम्मान को न केवल स्वयं और समुदाय के बीच बल्कि स्वयं और समुदाय के आदर्श मानदंडों के बीच की कड़ी के रूप में परिभाषित किया। इस प्रकार वह 'चेहरा' जिसे सही व्यवहार से बनाए रखना

[18] दान की स्वीकृति किसी को हीन स्थिति में डाल देती है। इसी वजह से, पंजाब में दान स्वीकारने वाले ब्राह्मणों का दर्जा बहुत नीचा होता है।

है, वह 'चेहरा' है जिसके साथ व्यक्ति खुद को समुदाय से जोड़ता है। इस अर्थ में 'चेहरे का नुकसान' एक व्यक्ति को अपने भीतर टूट कर सिमटने के लिए मजबूर करता है, जिससे उसका अस्तित्व उसके समाज के मूल प्रतिरूपों से असंबद्ध हो जाता है (देखें कैम्पबेल 1964)। आधुनिकता की समस्या पर एक हालिया अध्ययन में, बर्जर आदि ने इज़्ज़त और गरिमा के बीच निम्नलिखित शब्दों में अंतर किया है। " इज़्ज़त की अवधारणा यह दर्शाती है कि पहचान अनिवार्य रूप से, या कम से कम महत्वपूर्ण रूप से, संस्थागत भूमिकाओं से जुड़ी है। इसके विपरीत, गरिमा की आधुनिक अवधारणा यह दर्शाती है कि पहचान अनिवार्य रूप से संस्थागत भूमिकाओं से स्वतंत्र है (बर्जर एट अल 1974: 84)। दूसरे शब्दों में, इज़्ज़त की दुनिया में 'व्यक्ति अपने कवच पर अंकित सामाजिक प्रतीक होता है', जबकि गरिमा की अवधारणा से संचालित दुनिया में 'मनुष्यों की परस्पर क्रिया को नियंत्रित करने वाला सामाजिक प्रतीकवाद एक भेष (छलावा) होता है। कवच सच्चे स्वरूप को छिपाते हैं। पाठक के लिए यह स्पष्ट होगा कि शहरी पंजाबियों में इज़्ज़त की अवधारणा व्यक्ति और सामाजिक प्रतीक के बीच कोई तादात्म्य स्थापित नहीं करता जो उसके अंतःक्रिया को नियंत्रित करता है। सामाजिक प्रतीक मुखौटे हैं और जो पिता अपनी भटकी हुई बेटी की हत्या करके अपनी इज़्ज़त बचाता है, वह अपनी प्रतिष्ठा तो बचा सकता है, लेकिन वह अपने वास्तविक स्वरूप से अपूरणीय अलगाव के लिए अभिशप्त है। इज़्ज़त की यह अवधारणा यहाँ वर्णित नातेदारी व्यवस्था के अनुरूप है क्योंकि यह 'प्रदत्त और निर्मित' (the given and the constructed) की हेगेलीय एकता नहीं, बल्कि उनके वियोजन (disjunction) और द्वंद्वात्मकता (dialectic) को स्थापित करती है।

References

REFERENCES

Alavi, H. A. 1972. Kinship in west Punjab villages. *Contributions to Indian sociology* (*n.s.*) 6 : 1-27.

Berger, P. L. 1966. Identity as a problem in the sociology of knowledge. *European journal of sociology*: 105-15.

Berger, P. L. and T. Luckmann 1966. *The social construction of reality*. New York: Doubleday and Company.

Berger, P. L. 1969. *The social reality of religion*. London: Faber and Faber.

———. 1974. *The homeless mind*. London: Pelican Press.

Boudon, R. 1971. *The uses of structuralism*. London: Heinemann Educational Books.

Campbell, J. K. 1964. *Honour, family and patronage*. Oxford: Clarendon Press.

Das, V. 1973. The structure of marriage preferences. *Man* 8, 1: 30-35.

———. 1973. Hypergamy. *Contributions to Indian sociology* (*n.s.*) 7: 136-39.

Das, V. and U. Chakravarti, n. d. On the problems of women in India: a context analysis of Hindi news-media. Paper prepared for the national committee on the status of women in India.

Eglar, Z. 1960. *A Punjabi village in Pakistan*. New York: Columbia University Press.

Fortes, M. 1949. *The web of kinship among the Tallensi*. London: Oxford University Press.

Goffman, I. 1958. *The presentation of the self in everyday life*. U.S.A.: Anchor Books.

Karve, I. 1958. *Kinship organization in India*. Bombay: Asia Publishing House.

Khera, P. D. n. d. An essay on the sociology of *ishk* (love). (ms.).

Leach, E. 1968. On the kinship category tabu. *In* J. Goody, ed. *The development cycle of domestic groups*. Cambridge: Cambridge University Press.

Leaf, M. 1972. *Information and behaviour in a Sikh village*. Berkeley and Los Angeles: University of California Press.

Levi-Strauss, C. 1949. *Les structures élémentaires de la parente*. Paris : Presses Universitaires de France.

Malinowski, B. 1948. The problem of meaning in primitive language. *In Magic, science and religion*. Glencoe. (First published *in* C. K. Ogden and I. A. Richards 1923, *The meaning of meaning*.)

Madan, T. N. 1965. *Family and kinship: a study of the Pandits of rural Kashmir*. Bombay: Asia Publishing House.

Needham, R. 1967. Terminology and alliance 2. *Sociologians* 17: 39-54.

———. 1974. Age, category and descent. *In Remarks and inventions: skeptical essays about kinship*. London : Tavistock Publications.

Radcliffe-Brown, A. R. 1940. On joking relationships. *Africa* 13: 195-210.

———. 1949. A further note on joking relationships. *Africa* 19: 133-40.

SCHNEIDER, D. 1968. *American kinship: a cultural account.* Englewood-Cliffs: N. J. : Prentice-Hall.

SCHUTZ, ALFRED. 1962. *Collected papers.* The Hague: Nijhoff.

STRAWSON, P. F. 1950. On referring. *Mind* 59: 320-44.

TANDON, P. 1963. *Punjabi century.* London : Chatto and Windus.

VATUK, S. 1969. A structural analysis of Hindi kinship terminology. *Contributions to Indian sociology* (*n.s.*) 3: 94-115.

———. 1975. Gifts and affines in north India. *Contributions to Indian sociology* (*n.s.*) 2: 155-96.

YALMAN, N. 1962. The structure of the Sinhalese kindred: a re-examination of Dravidian kinship terminology. *American anthropologist* 64: 545-75.

———. 1964. On the purity of women among the castes of south India and Ceylon. *Journal of the Royal Anthropological Institute* 93: 25-58.